12558

चकमक

जुलाई, 1999 | बाल विज्ञान पत्रिका | रु. 10.00

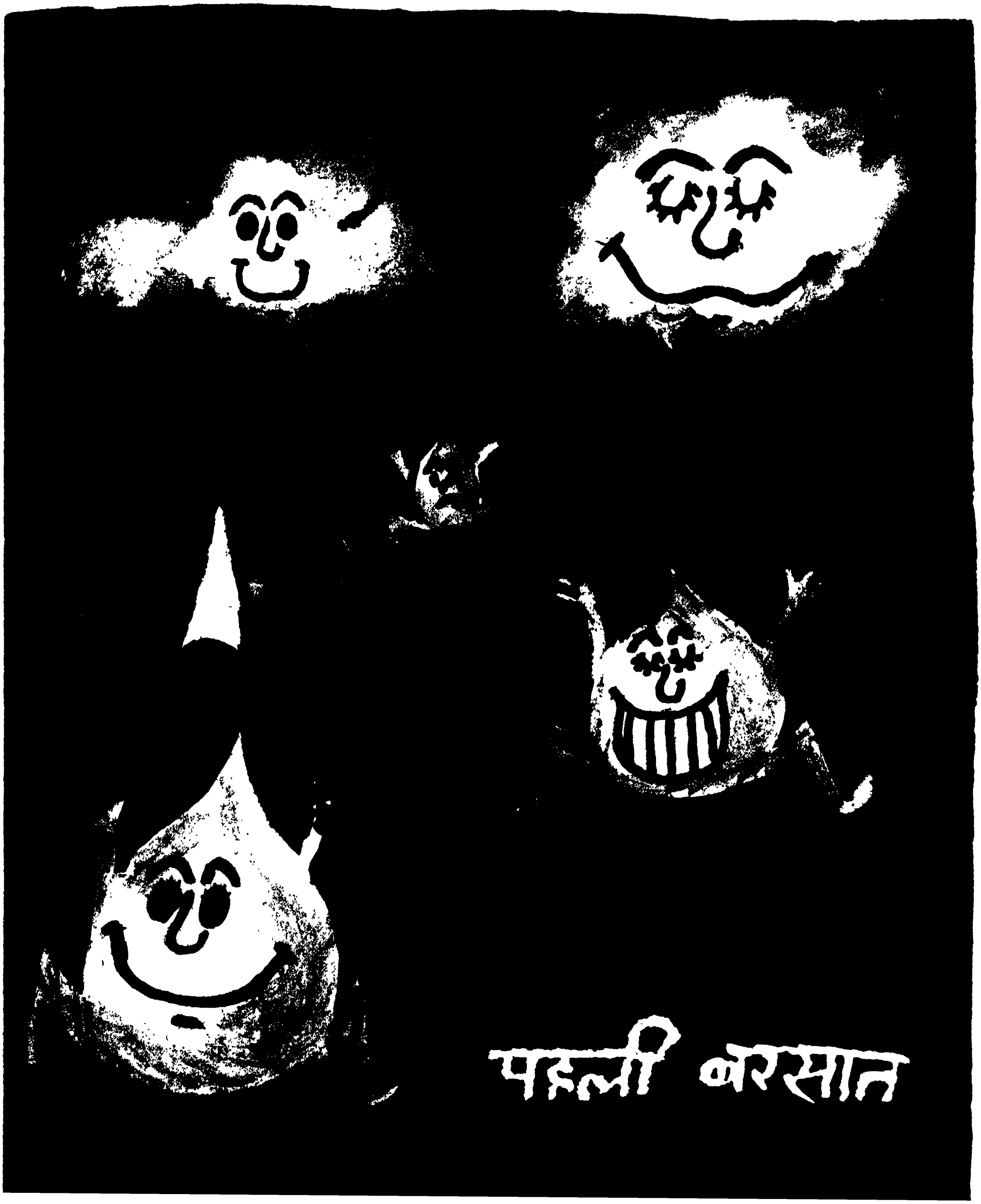

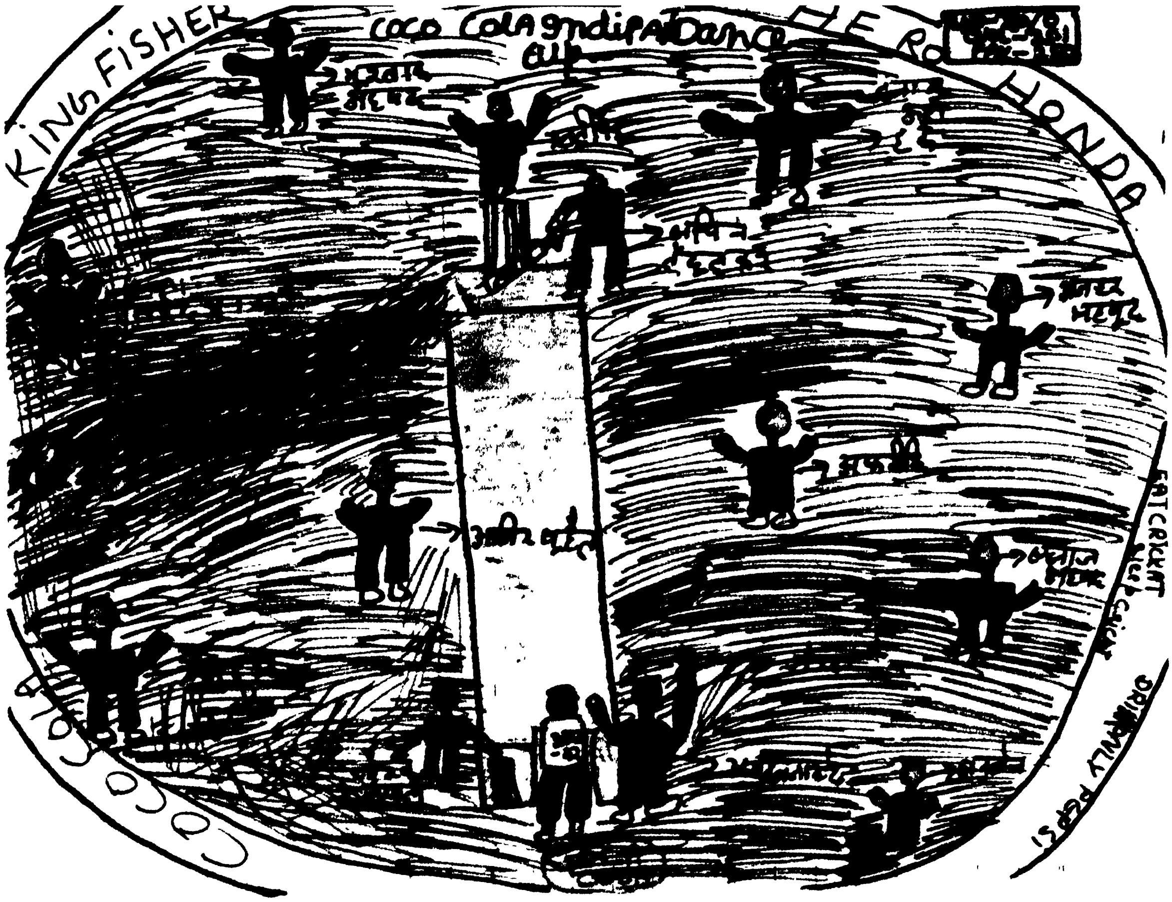

❖ विकास चौधरी, आठवीं, झुंझुनु, राजस्थान

❖ महेन्द्र कुमार वैष्णव, आठवीं, मकरेड़ा, अजमेर, राजस्थान

[illegible]

चकमक का चंदा
एक प्रति : 10.00 रुपए
छमाही : 50.00 रुपए
वार्षिक : 100.00 रुपए
दो साल : 180.00 रुपए
तीन साल : 250.00 रुपए
आजीवन : 1000.00 रुपए
चंदे के साथ अपना पूरा पता, मनीआर्डर/ड्राफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 15.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

कवर का कागज : यूनिसेफ के सौजन्य से

चिट्ठी-पत्री/रचना भेजने का पता
एकलव्य
ई-1/25
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016
(म. प्र.)
फोन : 563380

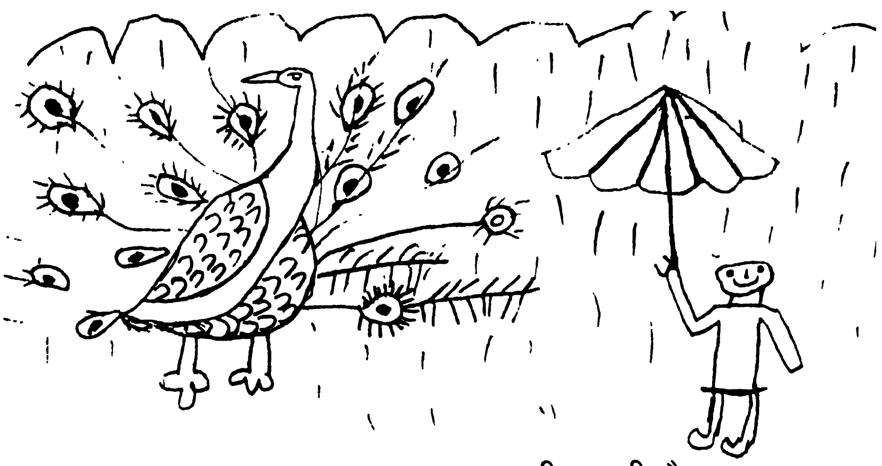

● राहुल अग्रवाल, पहली, सारणी, बैतूल, म.प्र.

166 वें अंक में .....

विशेष

मेरा पन्ना पृष्ठ 5, 6, 7, 8, 9, 13, 14, 15, 16, 17, 36 व 37 पर
अप्रैल अंक में दिए गए चित्र पर तुम्हारी रचनाएँ पृष्ठ 22, 23, 24, 25 व 26 पर

धारावाहिक श्रृंखला

18 आओ खेलें खेल - गाएँ गीत - 4
30 हमारे शिक्षक - 10

हर बार की तरह

2 इस बार की बात
33 वर्ग पहेली
34 माथापच्ची

और यह भी

10 अपनी प्रयोगशाला
12 मन की बात, चकमक के साथ
20 मुर्गी की दोस्त
27 चकमक समाचार
28 खेल कागज़ का – मेंढक
38 खेल खेल में

आवरण : क्षमा कुलश्रेष्ठ, नवमीं, भोपाल, म.प्र.

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात...

चकमक के पन्द्रहवें साल का यह पहला अंक है। चकमक की स्थिति के बारे में हमने पिछले अंक में अपने पाठकों के सामने कुछ बातें रखीं थीं। उसमें से अंतिम बात को हम फिर से दोहराना चाहते हैं। यह एक गम्भीर चिन्ता का विषय है कि हिन्दी में निकलने वाली बाल पत्रिकाएँ दस से अधिक नहीं हैं। इन दस में भी अगर स्तर की कसौटी रखेंगे तो शायद आधी कम हो जाएँगी।

हमें लगता है कि चकमक ने बाल-साहित्य और बाल-पत्रिकाओं की दुनिया में अपनी एक अलग जगह बनाई है। क्या आप इस बात से सहमत हैं? क्या आपको लगता है कि चकमक की वाकई कोई ज़रूरत है? बच्चों के लिए? शिक्षकों के लिए? बच्चों में रुचि रखने वाले हर बड़े के लिए?

यदि हाँ, तो बाल साहित्य के इस संघर्ष में आपके साथ, आपकी मदद की चकमक को ज़रूरत है। ये मदद इस तरह से हो सकती है-

1. आप स्वयं चकमक के वार्षिक या आजीवन सदस्य बनें।
2. अपने परिचितों, मित्रों को सदस्य बनाएँ।
3. संस्थाओं, पुस्तकालयों, शालाओं को चकमक का परिचय दें। उन्हें ग्राहक बनवाएँ।
4. आपके इलाके में यदि किसी पुस्तक विक्रेता से आपका परिचय है तो उसे चकमक के बारे में बताएँ। ताकि वह अपने स्टॉल पर चकमक बुलवाए।
5. चकमक की सदस्य संख्या बढ़ाने के लिए और क्या किया जा सकता है, या आप किस तरह से मदद कर सकते हैं, अपने सुझाव दें।

इस बीच जैसा कि सबको पता ही होगा, 26 मई, 1999 से डाक विभाग ने अपनी कुछ सेवाओं की दरों में परिवर्तन किया है। इस परिवर्तन से चकमक भी प्रभावित हुई।

डाक दरों की तरह कागज़ के दाम भी बढ़ रहे हैं। और छपाई की दर भी बढ़ सकती है। ऐसी स्थिति में चकमक की वर्तमान वार्षिक सदस्यता में चकमक पाठकों तक पहुँचा पाना संभव नहीं लगता। बहुत सोच-विचार के बाद हम इस नतीजे पर पहुँचे कि चकमक की वार्षिक सदस्यता में वृद्धि की जाए।

तो अब 1 जुलाई, 1999 से चकमक की दरें इस प्रकार होंगी-

एक प्रति	**रुपए 10.00**
छमाही	**रुपए 50.00**
एक साल	**रुपए 100.00**
दो साल	**रुपए 180.00**
तीन साल	**रुपए 250.00**
आजीवन	**रुपए 1,000.00**

आशा है इस कठोर निर्णय में चकमक के पाठक हमारे साथ हैं।

● एकलव्य समूह

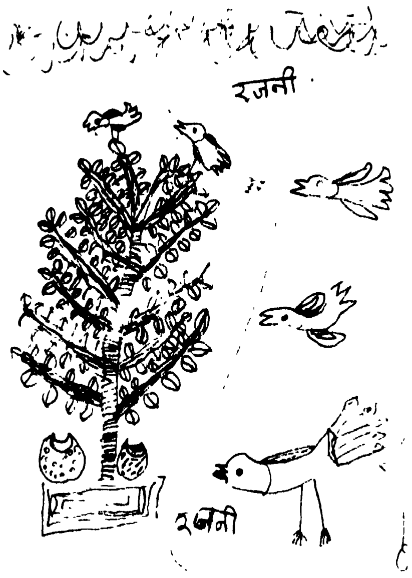

। रजनी, दूसरी, भोपाल, म. प्र.

श्यामवती, चौथी, बेहरापुरा, बैतूल, म. प्र.

। बलराम पोरवाल, बालागुड़ा, मंदसौर, म. प्र.

यहाँ से काट लें

चकमक
सदस्यता फॉर्म

मुझे/हमें निम्न पते पर
माह .... से
चकमक भेजना शुरू करें–
नाम ....
मोहल्ला ....
डाकघर ....
ज़िला ....
पिन
सदस्यता शुल्क रु. ....
....

माह/वर्ष के लिए मनीआर्डर/
ड्राफ्ट/चेक से भेज रहे हैं।

नाम एवं हस्ताक्षर

सदस्यता दरें

छह माह :	50.00 रुपए
एक साल :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सदस्यता शुल्क मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/ चेक से 'एकलव्य' के नाम में इस पते पर भेजें –

एकलव्य,
ई–1/25, अरेरा कॉलोनी,
भोपाल 462 016 (म. प्र.)

भोपाल से बाहर के चेक से शुल्क भेजते समय कृपया 15.00 रुपए बैंक चार्ज अतिरिक्त जोड़ें।

पाठक लिखते हैं

मुझे जिस दिन चकमक आती है, उसी दिन पढ़ने में और वर्ग पहेली भरने में बहुत मज़ा आता है। इस बार मैंने देखा कि चकमक के पेज नं. 8 पर भारती चौहान, कक्षा तीसरी, टिमरनी लिखा है तो मैं चौंक गई कि यह कौन है? चित्र देखा तो समझ में आया कि यह तो मेरा ही चित्र है। मैं तो भूल ही गई थी कि यह मेरा ही चित्र है।

मैं तो सोच भी नहीं सकती थी कि आप मेरा इतना पुराना चित्र भी रख सकते हैं। मुझे पुराने स्कूल के बारे में सभी कुछ याद आ गया। अब उस स्कूल की नए बिल्डिंग तैयार हो गई है।

मुझे अपना चित्र चकमक में देखकर बहुत खुशी हुई। मैंने अपनी सभी सहेलियों को दिखाया। उन्हें भी बहुत मज़ा आया।

इस वर्ष मैं बी.ए. की परीक्षा दे रही हूँ। मुझे लिखने की बहुत इच्छा होती है। अब मुझे ऐसा लग रहा है कि मुझे भी कुछ लिखकर आपके पास पहुँचाना चाहिए। इस चित्र से मेरे मन में नया उत्साह और विश्वास पैदा हो गया है कि मैं भी कुछ कर सकती हूँ।

● **भारती चौहान, टिमरनी, हरदा, म.प्र.**

चकमक का उपहार

अगर आप चकमक का सदस्यता शुल्क भेज रहे हैं तो अपने किसी ऐसे परिचित/दोस्त/परिवारजन का पता यहां लिखें जिस आप चकमक से परिचित कराना चाहते हों या चकमक का उपहार देना चाहते हों। हम उन्हें चकमक का एक अंक उपहार में भेजेंगे।

नाम ....

मोहल्ला

डाकघर

ज़िला

पिन

आप हर महीने चकमक के दो अंक मेरे पते पर नियमित रूप से भेज रहे हैं। जिनमें एक लोक विज्ञान संघटना के नाम और दूसरा मेरे और मेरी बहन विशा गंगाधरन् के नाम से।

कहने में बड़ा दुख हो रहा है कि मेरी बहन विशा गंगाधरन का 23 अगस्त 1998 को मुम्बई में अकल्पति देहावसान हो गया है। एकलव्य से वह अच्छी तरह से परिचित थी। इसलिए उसकी याद में चकमक बाल विज्ञान पत्रिका की सहायता के लिए एक हज़ार रुपए चेक द्वारा भेज रही हूँ।

कृपया आप इसको स्वीकार करें। और हमें चकमक के अंक नियमित रूपसे भेजकर हमारा स्नेह कायम रखें। धन्यवाद !

● **लक्ष्मी सुंदरम, माटुंगा, मुम्बई, महाराष्ट्र**

चकमक नियमित रूप से प्राप्त हो रही है। उसकी चिनगारियों की चमक से बाल संसार आलोकित भी हो रहा है।

नए अंक के संपादकीय में उभरी चिंता जायज़ है। मैं भी अपने तरफ से पूरा प्रयास कर रहा हूँ कि ग्राहकों की संख्या बढ़े। हर जगह चकमक की बात करना कभी नहीं भूलता। दरअसल बात तो ये है कि लोगों को अपने बच्चों का ज्ञान विकसित करने की दिशा में सोचने की फुर्सत ही कहाँ है? यकीन मानिए मेरी कॉलोनी के लगभग 7–8 बच्चे तो मेरे यहाँ आने वाली चकमक को ही घोंटते रहते हैं। खैर...

● **महेश कटारे सुगम,**
कुरवई, विदिशा, म. प्र.

बादल आए

घड़घड़ घड़घड़ बादल आए
आसमान पर बादल छाए
बरखा रानी जमकर बरसो
धरती पे सबके मन को हर्षो।
रिमझिम रिमझिम पानी बरसा
बच्चों का मन खुशी से हर्षा
सब बोले आओ बरसात में
हम सब मिलकर नाचें गाएँ,
आज सभी हम हिलमिल जाएँ,
कोई किसी में भेद नहीं है।
हम सबका मेल यहीं है।
बच्चे होते हैं मन के सच्चे
लड़ते झगड़ते फिर एक हो जाते,
मन में कोई मैल ना रखते,
हर पल रास नया रचाते
कभी गलियों में कभी सड़कों पर
बरसात का पानी खूब उछालते

पूजा दिलबर, तीसरी, अजमेर, राजस्थान

अनीता मीना, आठवीं, भोपाल, म.प्र.

मेरा पन्ना

कागज़ की किश्ती

कागज़ की किश्ती
बड़ी ही है प्यारी
बच्चों को लगे है
कितनी ये प्यारी।
नहीं इसमें नाविक
नहीं है खिवैइया
नहीं है गंगा मैया
नहीं है झील किनारे।
बरसात का पानी
ये नालियों की रानी
कहीं ये सड़कों पे
कहीं गलियों कूचों में
लगे कितनी प्यारी।
ये नन्हे बच्चों को
कागज़ की किश्ती
बड़ी ही है प्यारी।

● प्रमोद सांकल्ले, दसवीं, भादूगाँव, हरदा, म.प्र.

पढ़ाई

पढ़ाई पढ़ाई पढ़ाई में
जलते हैं हम कढ़ाई में
मम्मी पापा की धुनाई में
आता मज़ा पिटाई में
हम पढ़ाई के चोर हैं
खाने में मीठे के चटोर हैं
रातों में रसगुल्ले दिखते हैं
स्कूल आने पर हम पिटते हैं
मम्मी कहतीं पढ़ ले बेटा
मेरा भाई तो खाता पेठा
संस्कृत का तो नाम न लेता
हिन्दी इंग्लिश बोर कर देता
परीक्षा अब तो पास है आई
मम्मी कहती पढ़ लो भाई
फिर भी हमने न की पढ़ाई
परिणाम पत्र में लाल डंडी आई

● स्वाति चौधरी, छठवीं, उदयपुर, राजस्थान

● शुभम कौशिव, छठवीं, सांवेर, इन्दौर, म.प्र.

कमरा

कितना अच्छा कितना प्यारा
यही हमारा कमरा है,
दुनिया का सुख जो देता
यही हमारा कमरा है।
दिन भर की थकान मिटाने
जब मैं कमरे में आती हूँ,
संसार का सुख जैसे
इसी कमरे में पाती हूँ।
जब मन दुख से बोझिल हो जाता
जब जीवन उदास लगता है
यह कमरा दिलासा देता
सारे गम को यह हर लेता।
निरुद्देश्य-सा जब जीवन लगता
जब मन में कुविचार पनपते
तब यह पनाह में लेता
कहता तू मेरी बेटी है।

● लिकेश्वरी वर्मा, आठवीं, माना केम्प, रायपुर, म.प्र.

ईशा पुंगालिया, पाँचवीं, पुणे, महाराष्ट्र

एक दिन

मैं एक दिन तालाब के पास गया था। मैंने तालाब में नहाया। जब मैं तालाब से बाहर निकला, तब वहाँ दो गुंडे खड़े थे। उनके कपड़े, बाल और मूँछ से पता चला की वह गुंडे हैं। मेरे तो होश ही उड़ गए। फिर भी मैंने हिम्मत दिखाई। मैं उनके पास से घर जाने ले लिए निकला। लेकिन यह क्या? उन्होंने मुझे पकड़ लिया। मैं 'बचाओ बचाओ' नहीं चिल्लाया। लेकिन उनके साथ दादागिरी करने लगा। उतनी देर में गाँव के लोग लाठियाँ लेकर आए। उन्होंने गुंडों को खूब मारा और मैं अपने घर चला गया।

● रुचिर पुरोहित, गाँधीनगर, गुजरात

जोकर

मैं करतब दिखाता हूँ
सबको खूब हँसाता हूँ।
बच्चों का हूँ मैं प्यारा
लगता हूँ सबसे न्यारा।
रंग बिरंगे कपड़े मेरे
ढीले ढाले तन पर मेरे।
रंग बिरंगे गेंदों के संग
सब खेल देखकर होते दंग।

● अर्पित जैन, ग्यारह वर्ष,
कानपुर, उ. प्र.

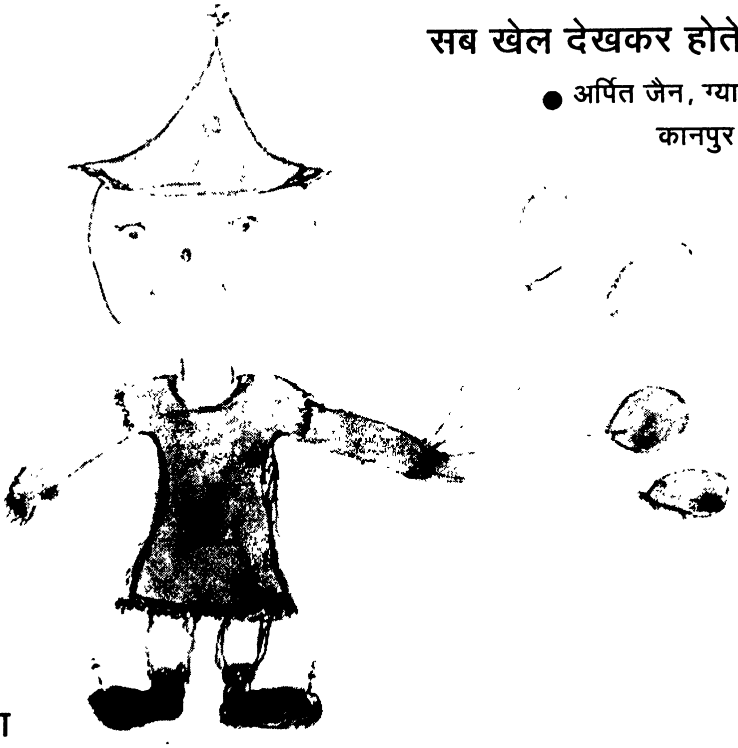

● पंकज चौहान, छठवीं, देवास, म. प्र.

प्यारा चिंटू

मम्मी ने पापा को डाँटा
क्यों मारा चिंटू को चाँटा?
चिंटू तो था प्यारा बेटा
फिर भी भूखा प्यासा लेटा
जाओ उसे मना लो तुम
घड़ी मिल गई जो थी गुम
जिसकी गलती पता लगाओ
फिर आगे से हाथ उठाओ!

● एकता-अमन, समालखा, पानीपत, हरियाणा

मैं कैदी के पास बैठा

एक बार की बात है, मैं मेरे पापा, मम्मी, दीदी हम सब लून्हेरा गए। वहाँ मेरी मम्मी के नानाजी शांत हो गए थे। हम लुन्हेरा से वापस धार की बस पकड़ रहे थे। हमारे साथ मेरे दादा-दादी भी थे। हमें एक बस मिली। उसमें जगह बिल्कुल नहीं थी। उसमें सौ से भी ज़्यादा सवारी थी। बस में पैर रखने को भी जगह नहीं थी। फिर भी बस वाले ने हम सब को यह कहकर बस में घुसा लिया कि अभी तो बहुत सारी जगह है।

मेरे दादाजी ने मुझे एक कैदी की गोदी में बिठा दिया। मुझे डर लग रहा था। मैंने उनसे पूछा, 'तुम्हारे हाथ में हथकड़ी क्यों लगी है?'

उन्होंने कहा, 'मैं चोर नहीं हूँ। मेरे बैल कोई चोरी करकेले जा रहा था, मैंने उसे मार दिया। इसीलिए मेरे हाथ में हथकड़ी पड़ गई।'

वो कोर्ट जा रहा था। हम सब भी धार में उतर गए।

रजत शर्मा, तीसरी, उज्जैन, म. प्र.

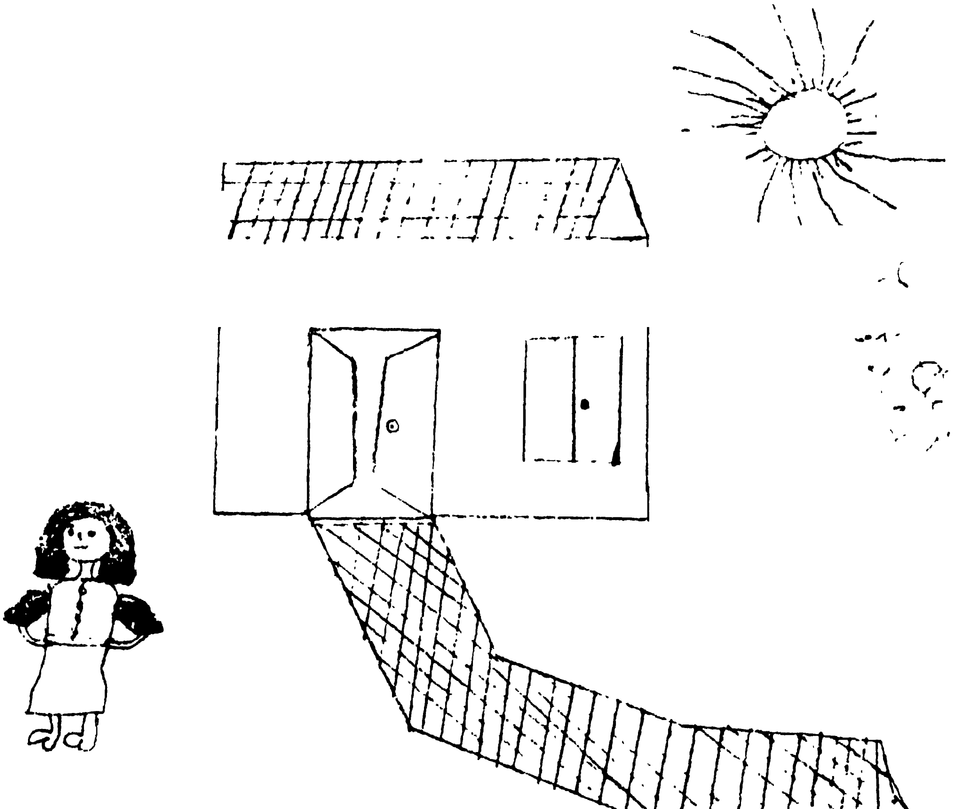

● पूजा कुक्कड़ (पता नहीं लिखा)

कितनी बार धक्-धक्

मधु भूगोल की पुस्तक पढ़ रही थी। भूगोल मेरा प्रिय विषय रहा है इसलिए मैंने मधु से कहा कि वह और जोर से पढ़े। उसने जोर-जोर से पढ़ना शुरू किया– ''मध्यप्रदेश भारत के बीचोंबीच स्थित है। इसे भारत का हृदय भी कहते हैं....''

बस..... हृदय का नाम लेते ही मधु का मन भूगोल से उचटकर हृदय यानी दिल पर आ गया। वह दिलके बारे में जानने की जिद करने लगी। दिल क्या होता है? दिल के क्या-क्या कार्य हैं? यह धक्-धक् क्यों करता है? मैं समझ गया कि मैं एक बड़ी समस्या से घिर चुका हूँ और अब मधु को इसके बारे में बताए बिना मैं इससे निजात नहीं पा सकूँगा। मधु को जो कुछ प्रयोग और खेल बताए, तुम भी जानो।

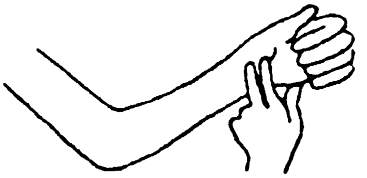

क्या तुमने कभी अपने साथी की छाती की बाईं ओर कान लगाकर सुना है? नहीं तो करके देखो। तुम्हें दिल के धड़कने की आवाज़ सुनाई देगी। धक्-धक्,धक्-धक्...। तुमने देखा होगा कि मरीज़ की जाँच करते समय डॉक्टर आला (स्टेथोस्कोप) लगाकर कुछ सुनता है। वह असल में उसकी साँस की आवाज के अलावा दिलकी धड़कन भी सुनता है।

तुम अपने बाएँ हाथ से अपनी दाहिनी कलाई को कसकर पकड़ो। और गिनो कि एक मिनिट में धक्-धक् की आवाज़ कितनी बार होती है।

असल में इस तरह से हम दिल की धड़कन के कम्पन महसूस करते हैं – आवाज़ नहीं सुनते। मैंने और मेरे दोस्त ने जब ऐसा करके देखा तो मेरे हृदय की धड़कन एक मिनिट में आई 73 बार और मेरे दोस्त की 76 बार। तुम भी करो और देखो कि एक मिनिट में तुम्हारा दिल कितनी बार धड़कता है।

चित्र में तुम्हें यह आसानी से समझ में आ जाएगा कि यह काम कैसे करना है।

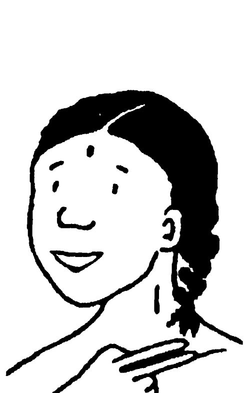

तुम शरीर के ऐसे और भी भागों या अंगों को खोजो, जहाँ तुम्हें नाड़ी की धड़कन महसूस होती हो। जैसे कनपटी के नीचे, दाईं व बाईं आँख के बगल में कान की तरफ।

अब एक प्रयोग करके देखते हैं कि दिल खून को कैसे पूरे शरीर में पहुँचाता है।

एक बाल्टी में पानी लो और दोनों हथेलियों को पानी के अन्दर कसके बन्द करो फिर खोलो (जैसा चित्र में दिखाया है)। यह क्रिया बार-बार करने पर तुम्हें दबाव-सा महसूस होगा। हृदय इसी प्रकार के दबाव से खून को पम्प करता है।

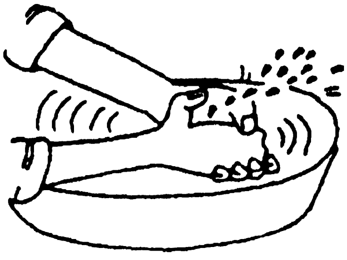

लुहार की धौंकनी से तो तुम परिचित होगे ही। उससे भी हृदय के काम करने के तरीके को समझा जा सकता है।

अब एक और प्रयोग करते हैं। इस प्रयोग के लिए तुम्हें तीन चीज़ों की ज़रूरत होगी। एक थोड़ा-सा बड़ा बर्तन, एक बाल्टी और एक रबर की नली। बर्तन में थोड़ा-सा पानी लो।

रबर की नली का एक सिरा बर्तन में भरे पानी में डालकर हथेलियों में लो, दूसरे सिरे को बाल्टी के अन्दर लटका दो। चित्र में देखो कैसे सब कुछ जमाया है। अब हथेलियों में पकड़े सिरे को दबाओ, छोड़ो, फिर दबाओ और फिर छोड़ो। ऐसा बार-बार करने से तुम देखोगे कि पानी रबर की नली द्वारा बाल्टी में आ गया है। हृदय भी खून को इसी तरह पम्प करके शरीर के हर हिस्से तक पहुँचाता है।

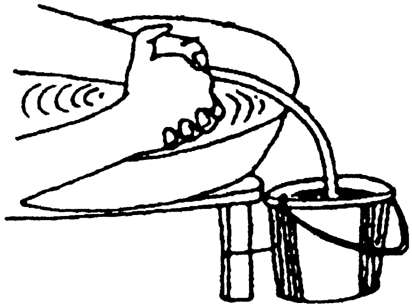

तो ये थे कुछ प्रयोग। इनके अलावा और भी कई ऐसे प्रयोग हो सकते हैं जिनसे अपने दिल के बारे में काफी कुछ जाना जा सकता है।

'वी.एस.ओ. हैंड बुक फॉर साइंस टीचर्स' से साभार

माथापच्ची : हल जून, 99 अंक के

1. इस सवाल में गलती से एक जानकारी छूट गई थी। वह यह कि बाज़ार से लौटते समय मेरे पास कुल 27 रुपए थे। अब तुम हिसाब जोड़कर बताओ कि मैं घर से कितने पैसे लेकर चली थी?

3. उसका बेटा है।

4. 1.25 x 4 = 5

5. सिर्फ एक शब्द।

6.

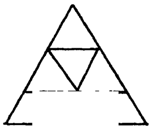

7. 15

गणित की पहेलियों के हल

1. 2 + 9 = 11 मेंढक
2. 2 x 10 = 20 डण्डे
3. 2−1 = 1 गोली
4. 1+ 10 + 2 =13 बार

पेज 40 की पहेलियों के हल

बैल बक्खर और आदमी

रोटी

जलेबी

पपीता

वर्ग पहेली - 94 का हल

ज	ल	ध	र		न	भ		
रा		न	थ		म	ला	ई	
यु	वा			धा	क		ख	त
	ह	क	दा	र		क		बे
अ		ल	वा		भा	व		ला
मृ		गी		थ	ल	च	र	
त	ह		झ	क			ई	मा
	म	दा	र		पा	या		सू
		म	र्त		रो	क	था	म

वर्ग पहेली - 94 का एक भी सही हल हमें नही मिला।

मन की बात, चकमक के साथ

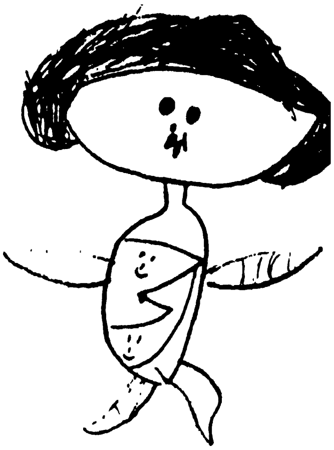

गर्मियों की छुट्टियाँ बीतने को हैं। तुमने इन छुट्टियों में खूब मज़े किए होंगे, उधम मचाया होगा। डाँट खाई होगी और शायद पिटाई भी पड़ गई होगी। तरह–तरह के सवाल दिमाग में आए होंगे। खैर... अब तो स्कूल खुलने को हैं। नई कक्षा, नई किताबें और शायद नए शिक्षक भी। पर स्कूल शायद वही पुराना हो। स्कूल के बारे में तुम्हारे मन में कभी विचार आता होगा कि अगर स्कूल में ऐसा होने लगे या वैसा नहीं हो, तो कितना अच्छा रहे। पर कहें किससे....? चलो हम तुम्हें आमंत्रित करते हैं अपने मन की बात कहने के लिए– लिखो कि.....

- तुम अपने स्कूल में किस तरह का बदलाव चाहते हो? स्कूल की व्यवस्था, पढ़ाई का तरीका, शिक्षकों का व्यवहार, स्कूल की सुविधाएँ या ऐसी ही और ढ़ेर सारी बातें। जिनमें बदलाव चाहते हो, उनके बारे में विस्तार से लिखो।
- जब घर में तुम्हारी पिटाई हुई, तो तुमने कैसा अनुभव किया? क्यों पीटते हैं आखिर? पिटाई से क्या जताना चाहते हैं? क्या माँ–बाप या अन्य बड़ों को बच्चों को पीटने का अधिकार होना चाहिए?

इनमें से किसी एक विषय पर अपने मन की बात 30 जुलाई तक लिखकर हमें भेज दो। चुनी हुई मन की बात, चकमक में प्रकाशित होंगी। साथ ही उन्हें व्यक्त करने वालों को मजेदार किताबें उपहार में भेजी जाएँगी।

चुनाव करते समय हम दो आयु वर्ग बनाएँगे–

पहला वर्ग होगा 5 से 12 वर्ष का

दूसरा वर्ग होगा 12 से 18 वर्ष का

अपने नाम के साथ कक्षा, आयु तथा घर का पूरा पता लिखना। हमें तुम्हारी मन की बातों का इस पते पर इन्तजार रहेगा–

मन की बात, चकमक के साथ

एकलव्य
ई–1/25
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462016,
म.प्र.

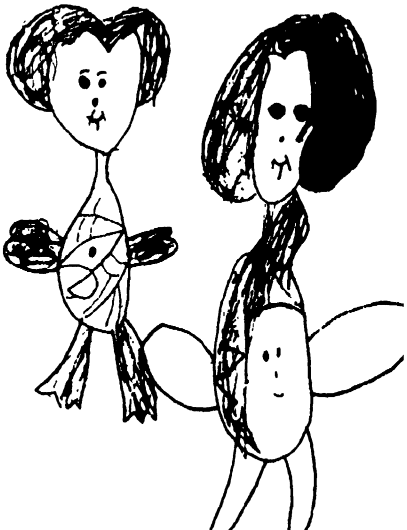

चित्र : मनु चौधरी, बिजनौर, उ. प्र.

चिड़िया

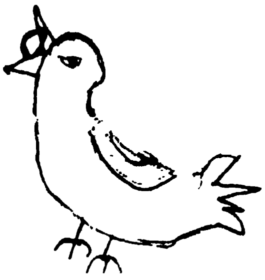

● चिन्ना फिलोमिना, छह वर्ष, भोपाल, म.प्र.

चिड़िया चिड़िया आजा
ढमढम ढोल बजा जा
बिल्ली को भगा जा
चाट पकौड़ी खा जा
रूठ रही है मम्मी मेरी
आकर मना जा

● गर्विता सहगल, पाँच वर्ष, बीकानेर, राजस्थान

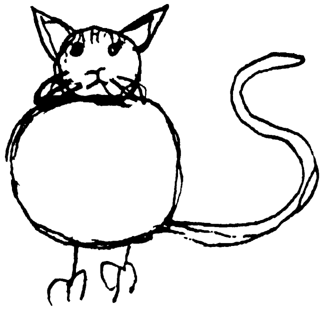

बिल्ली और चिड़िया

एक दिन की बात है। मैं आँगन में खड़ी किताब पढ़ रही थी। तीन पृष्ठ ही पढ़ पाई थी कि चीं चीं की आवाज़ सुनाई दी। फड़-फड़-फड़ भी हो रही थी। मेरा पढ़ना एकदम छूट गया। मैंने इधर-उधर नज़र दौड़ाई। देखा कि आँगन में एक बिल्ली बैठी है। उसके पंजों में एक नन्ही-सी चिड़िया फड़फड़ाती हुई चीं चीं चिल्ला रही है। मुझसे यह देखा नहीं गया। मैंने आव देखा न ताव डंडा उठाकर बिल्ली की ओर फेंका। बिल्ली चिड़िया को वहीं छोड़कर भाग गई।

● सुनील अमकरे, छठवीं, भोपाल, म.प्र.

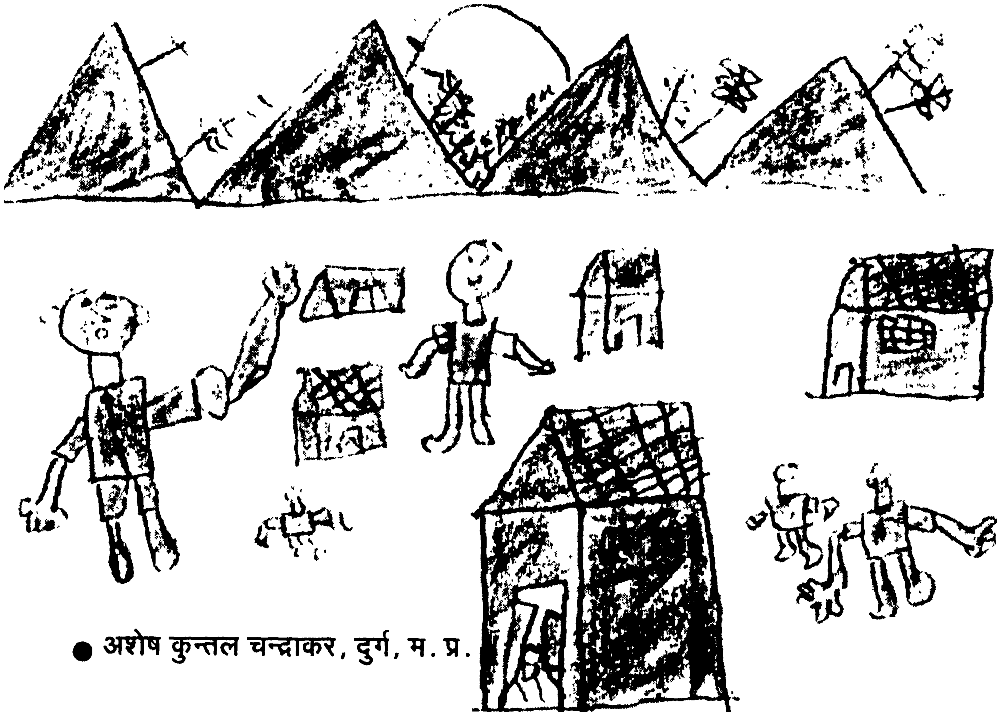

● अशेष कुन्तल चन्द्राकर, दुर्ग, म.प्र.

मेरा पन्ना

बारिश

बिजली चमकी चमचम-चमचम
बादल गरजे घमघम-घमघम
बारिश आई रिमझिम रिमझिम
मोर नाचता छम छम छम छम
मनु भागा धमधम धमधम
लोग भी भागते धम्मकधम।

● ओमांशु थपलियाल, पाँच वर्ष, भोपाल, म.प्र.

●अंकिता शर्मा, चौथी, भौपाल, म. प्र.

पतंगबाजी

एक बार की बात है। मेरे चार दोस्त थे। रामू, श्याम, मोहन, सोहन। हम लोगों को पतंग उड़ाने का बहुत शौक था। हम एक दिन एक ऊँचे रेत के टीले पर पतंग उड़ा रहे थे। रामू को एक शरारत सूझी। उसने पतंग उड़ाना छोड़, पास बैठे एक कुत्ते को पत्थर मार दिया। कुत्ते ने रामू के पैर में काट लिया। रामू खूब ज़ोर से रोने लगा। हमने उसके रोने की आवाज़ सुनी तो उसके पास गए। तो सब पता चला। हमने उसकी पास के सरकारी अस्पताल में मरहम-पट्टी करवाई।

● महेन्द्र कुमार वैष्णव, आठवीं, मकरेड़ा, राजस्थान

कौन समझे वनों का दर्द

आपने कभी सोचा है कि वनों को दुख, दर्द, खुशी या गम होता है। नहीं न। मैं आपको यह बताना चाहती हूँ कि मनुष्य के जीवन में कभी दुख और कभी सुख आता है। लेकिन वनों के जीवन में केवल दुख आता है। जैसे जो वन पर्यावरण को शुद्ध रखते हैं, मानव जीवन को सुविधा उपलब्ध कराते हैं, लोग उन्हें ही काट देते हैं।

वे बेजुबान हैं तो क्या हुआ। अपना दर्द वे खामोश होकर भी बता सकते हैं। एक दिन ऐसे ही मैं और मेरी दोस्त घूमने निकले। चलते-चलते हम झाड़ियों और वृक्षों के बीच पहुँचे। वहाँ चारों तरफ सुनसान था। जब आगे-आगे चलने लगे तो कुछ सूखे पेड़, दरार पड़ी ज़मीन तथा कुछ मुरझाए पौधे दिखे। लेकिन मुझे अच्छी तरह याद है कि वह जगह कुछ महीनों पहले हरी-भरी थी। लेकिन उसे शायद लालची लोगों की नज़र लग गई। जो थोड़े से पैसों के खातिर इनको नष्ट कर देते हैं।

जब मैं उन सूखे पेड़ों व पौधों के पास गई तो मुझे ऐसा लगा मानो वह पेड़ मुझे 'धिक्कार धिक्कार' कह रहे हों कि देखो तुमने मुझपे कोड़े बरसाए थे, जिससे मेरे पत्ते झड़ गए। जब मैंने दरार पड़ी जमीन को देखा तो वह चीख-चीखकर कह रही थी कि देखो मेरी ओर। तुमने मेरे हृदय पर कितने घाव किये हैं। आखिर मैंने तुम्हारा क्या बुरा किया है। बल्कि मैं दुनिया के सभी मानवों को अपनी बाँहों में समेटे हुए हूँ।

आगे बढ़कर मैं पौधों की ओर गई तो वे ऐसे लग रहे थे मानो मुझे देखकर डर गए हों, सहम गए हों। वे एक दूसरे से चिपक गए कि मैं उन्हें तोड़ न दूँ। पत्ते पर पड़ी ओस की बूँदें ऐसी लग रही थीं मानो वे मुझे देखकर रो रही हों। और सूखे पेड़, दरार पड़ी ज़मीन की दशा को देखकर शोक मना रहे हों। जिस प्रकार बच्चा गलती करने पर अपनी माँ को आते देखकर रोने लगता है। लेकिन मैंने तो उनका कुछ नहीं किया। शायद मेरा कुसूर यही है कि मैं मनुष्य हूँ।

देखा आपने वनों में रहने वाले सभी जीव, जन्तु, पेड़-पौधे मनुष्य से कितनी ईर्ष्या करते हैं। फिर वही वन भूकंप, ज्वालामुखी, बाढ़, सूखा के द्वारा अपना प्रकोप प्रकट करते हैं। ये तो आपका कुछ बिगाड़ते नहीं। तो फिर लोग इसको क्यों नष्ट कर रहे हैं। क्यों उनमें रहने वाले जीव, जन्तु को सर्कस का जोकर बना रहे हो, उनकी खालों में भूसा भरकर घर की शोभा बढ़ा रहे हो। आखिर हम उन्हीं के सहारे जीवन व्यतीत कर रहे हैं। हमें इन वनों से अपनी जीवन दायिनी आक्सीजन मिलती है और लोग इसे ही नष्ट करने में लगे हैं। इन वनों के दर्द को न ही कोई समझा था न ही कोई समझा है और न ही कोई समझेगा

सोनू चौहान, धार, म.प्र.

खाल्या सिंगा वसावे, चिमलखेड़ी, महाराष्ट्र

आओ खेलें खेल- गाएँ गीत : 4

इस बार फैज़ाबाद के एक स्कूल के कुछ बच्चों ने अपने आसपास के खेल और उनके साथ गाए जाने वाले गीत हमें लिखकर भेजे हैं। तुम भी ये खेल खेलते होगे। तुम इनके साथ कौन-से गीत गाते हो, हमें लिखना।

इसके अलावा तुम अपने आसपास के खेल, जो तुम खेलते हो और उनके साथ जो गीत गाते हो, हमें लिखना। अगर तुम इस तरह के खेलों के बारे में नहीं खेलते तो अपने घर के बड़ी उम्र के लोगों से पूछो। उन्हें अपने ज़माने के कुछ खेल तो याद होंगे ही। उनसे सीखो, खेलो और हमें भी लिखकर भेजो। हम चकमक में छापेंगे तो और बच्चे भी वो खेल खेल पाएँगे।

बुड्ढी माई की गइया

इस खेल में सारे बच्चे एक साथ एक जगह इकट्ठे होकर तय करते हैं कि जो सामने दिख रहे पेड़ या अन्य किसी चीज़ को पहले छू लेगा वह बुड्ढी माई बनेगा।

सारे बच्चे एक साथ दौड़ते हैं, जो बच्चा पहले पेड़ को छू लेता है बुड्ढी माई बन जाता है। अब वह बच्चा डन्डा लेकर एकदम बुड्ढी माई जैसी ही नकल करता है। और झूठ-मूठ का सामान ढूँढता है। सारे बच्चे बुड्ढी माई से कहते हैं–

बुड्ढी माई बुड्ढी माई क्या कर रही हो,
मैं तो सुई-धागा ढूँढ रही हूँ।
सुई धागा बुड्ढी माई क्या करोगी,
सुई धागा से एक थैली बनाऊँगी
थैला बनाकर बुड्ढी माई क्या करोगी,
पैसा इकट्ठा करूँगी।
पैसा इकट्टा करके क्या करोगी
पैसा इकट्ठा करके गाय खरीदूँगी
बुड्ढी माई गाय खरीद कर क्या करोगी
गाय खरीदकर दूध निकालूँगी
दूधवा के नाम तलछटवा पीलो

बुड्ढी माई गुस्सा होकर बच्चों के पीछे भागती है। बच्चे बचते हुए दौड़ते हैं। वह जिसको पहले पकड़ लेती है, वह बुड्ढी माई बन जाता है। और यह खेल फिर से शुरू होता है।

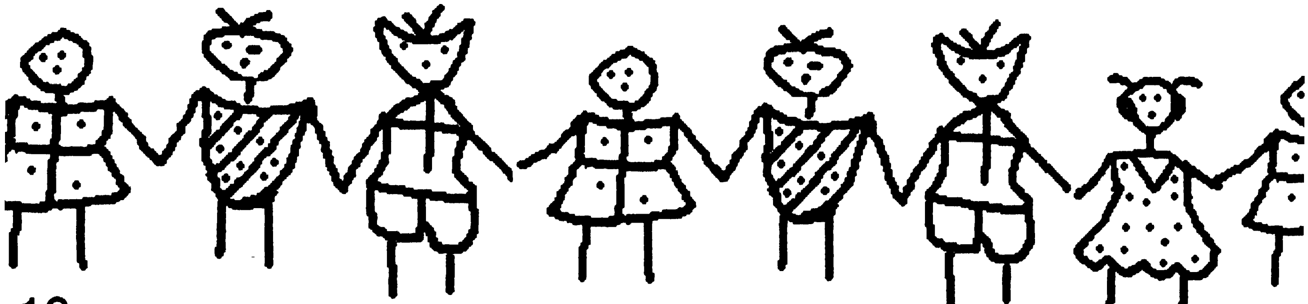

बूढ़ी माई

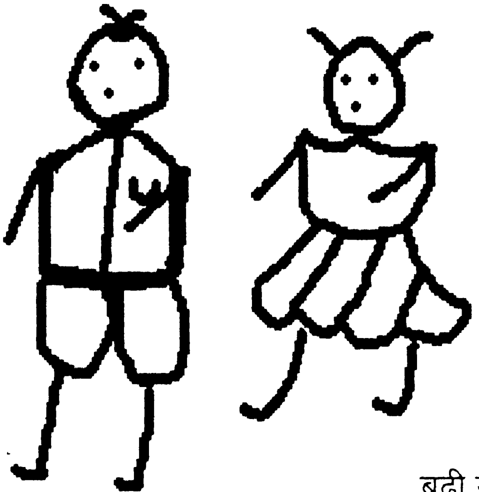

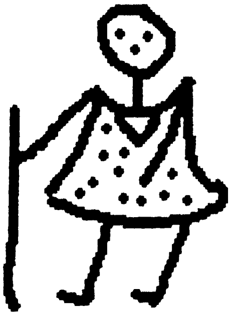

सारे बच्चे एक छोटा गोला बनाकर खड़े होते हैं। एक बच्चा गोले के चारों तरफ घूमता है और सारे बच्चे कुछ इस तरह बात करते हैं–

बच्चे : बूढ़ी माई, बूढ़ी माई, कहाँ जा रही हो?

बूढ़ी माई : नदी पर नहाने जा रही हूँ।

बच्चे : नदी तो यहीं पर है।

बूढ़ी माई : यह तो बड़ी छोटी है।

बच्चे : एक पैसा डाल दो तो बड़ी हो जाएगी।

बूढ़ी माई झूठ-मूठ का एक पैसा डाल देती है। बच्चे गोला थोड़ा-सा बड़ा कर लेते हैं।

बूढ़ी माई : ये तो अभी भी छोटी है।

बच्चे : सब पैसा डालोगी, तो बड़ी हो जायेगी।

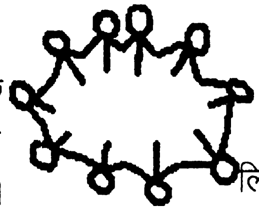

बूढ़ी माई झूठ-मूठ के कुछ और पैसे डाल देती हैं। बच्चों का गोला थोड़ा और बड़ा हो जाता है।

माई : अब मैं नहा लूँ।

बच्चे : नहा लो।

बूढ़ी माई : खाना बना लूँ।

बच्चे : बना लो।

बूढ़ी माई : अरे! मैं घी लाना तो भूल गई। मैं घी ले आऊँ।

बच्चे : ले आओ।

और फिर उसके बाद सारे बच्चे उसका झूठ-मूठ का खाना खा जाते हैं। तब बूढ़ी माई रोती और पूछती है।

बूढ़ी माई : मेरा खाना किसने खाया?

बच्चे : शेर ने खाया।

बूढ़ी माई : शेर तो मेरे पीछे था।

बच्चे : साँप ने खाया।

बुढ़ी माई : साँप तो मेरे पीछे था।

बच्चे : हमने खाया, हमने खाया।

तब बूढ़ी माई सभी बच्चों को पकड़ने के लिए उनके पीछे भागती है। बाकी बच्चे दौड़ते हैं। जो बच्चा पकड़ आ जाता है वही अगली बार बूढ़ी माई बनता है।

● विश्वनाथ, अर्चना सिंग, फैजाबाद, उ. प्र.

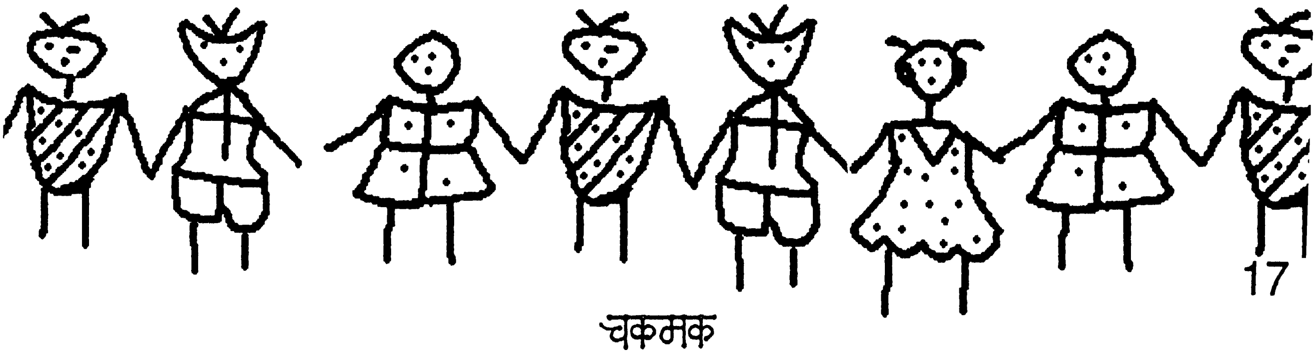

मेरा पन्ना

जब मैंने आलू उगाए

एक बार की बात है। जब मैं रसोई में गई तो माँ आलू की सब्जी बना रही थी। वहाँ आलुओं की टोकरी भी रखी हुई थी। अचानक मैंने देखा कि कुछ आलुओं में कई जगहों से हरे रंग की कोपल निकली हुई थीं। मैंने माँ से पूछा कि वे किस तरह के आलू हैं। तब माँ ने बताया कि उन आलुओं को बोने से उनके पौधे आते हैं। बाद में मिट्टी के अन्दर कई आलू उन पौधों की जड़ों में आ चुके होते हैं। उन आलुओं को बाज़ार में बेचा जाता है, हम उन्हें खरीदते हैं और फिर सब्जी बनाते हैं।

मेरे मन में विचार आया कि क्यों न मैं भी चुपके से आलू उगाऊँ। मैंने टोकरी से एक आलू जिसमें कोंपल थीं, उठाया और घर के पिछवाड़े की खाली ज़मीन में बो दिया। प्रतिदिन मैं उसमें पानी देती थी। धीरे-धीरे आलू के नन्हे-नन्हे पौधे उग आए और बड़ी तेज़ी से बढ़ने लगे। पन्द्रह दिनों में वे मेरे घुटनों की ऊँचाई तक पहुँच गए। एक बार एक बकरी उन पत्तों के लालच में वहाँ आ गई। वो तो मैं समय पर पहुँच गई नहीं तो वह मेरे पौधों को खा जाती। उसे जल्दी से भगाया और फिर पौधों को निहारने लगी। उनके कोमल पत्ते बड़े ही चमकदार व मुलायम थे। हल्की -हल्की हवा में हिलौरे खा रहे थे। मेरा मन खुश हो गया।

फिर एक दिन ऐसा भी आया जब मुझे लगा कि पौधों को उखाड़ना चाहिए। जब मैंने उन्हें उखाड़ा तो मेरी खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा। मिट्टी में कई सारे, करीब सात-आठ छोटे व बड़े आलू थे। मैंने खुशी-खुशी माँ को वे आलू दिखाए तो उन्हें आश्चर्य के साथ प्रसन्नता भी हुई। मैंने माँ से अनुरोध किया कि वे उन्हीं आलुओं की सब्जी बनाएँ। माँ तैयार हो गईं और एक नन्हीं कटोरी के बराबर सब्जी तैयार हो गई।

दिन में पिताजी जब घर आए तो उन्होंने खाना खाया। उनकी थाली में भी हमने थोड़ी आलू की सब्जी रखी। उसे खाकर पिताजी ने आलुओं की तारीफ की व कहा कि आलू बड़े मुलायम थे। तब मैंने बताया कि आलू मैंने उगाए थे। पिताजी बड़े खुश हुए और मेरी पीठ थपथपाई। साथ में कुछ टॉफियाँ भी ईनाम में दीं।

● पल्लवी नौटियाल, आठवीं, काँके रोड़, राँची, बिहार

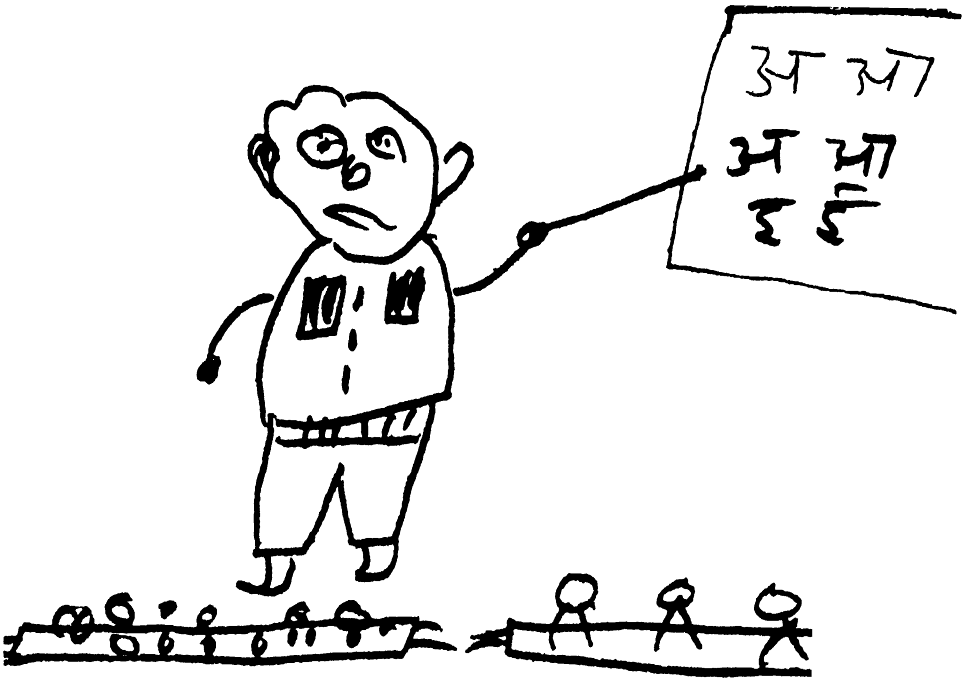

गजेन्द्र सिंह पिछोड़े, दूसरी, पाण्डुतला, बालाघाट, म.प्र.

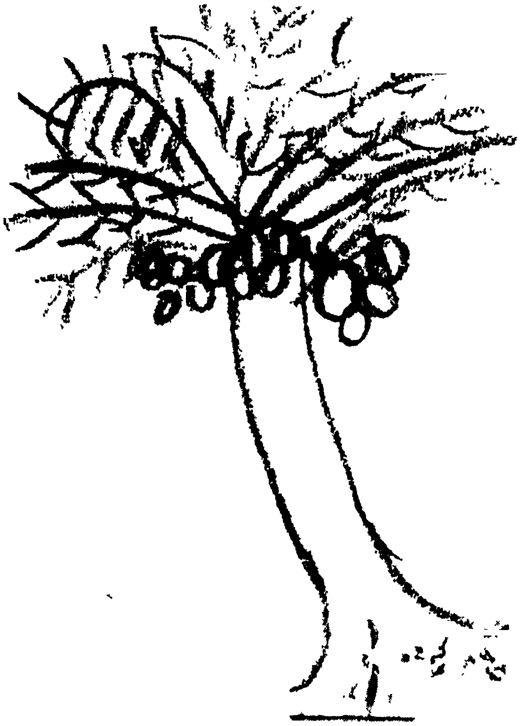

चुपके से बहार आ जाए

जब स्कूल खुलते हैं
नई-नई किताबें आती हैं
तब बच्चों के मन में
चुपके से बहार आ जाती है।

● टीना मिश्रा, दस वर्ष, भोपाल, म.प्र.

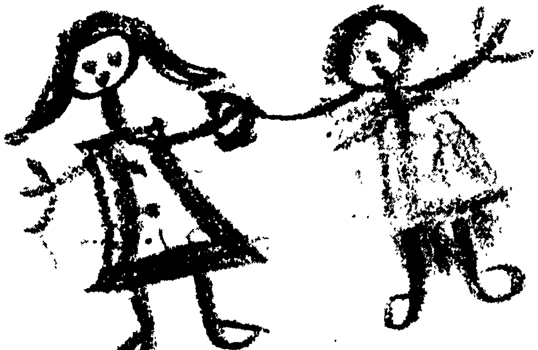

समीक्षा मिश्रा, दूसरी, देवास, म.प्र.

मुर्गी

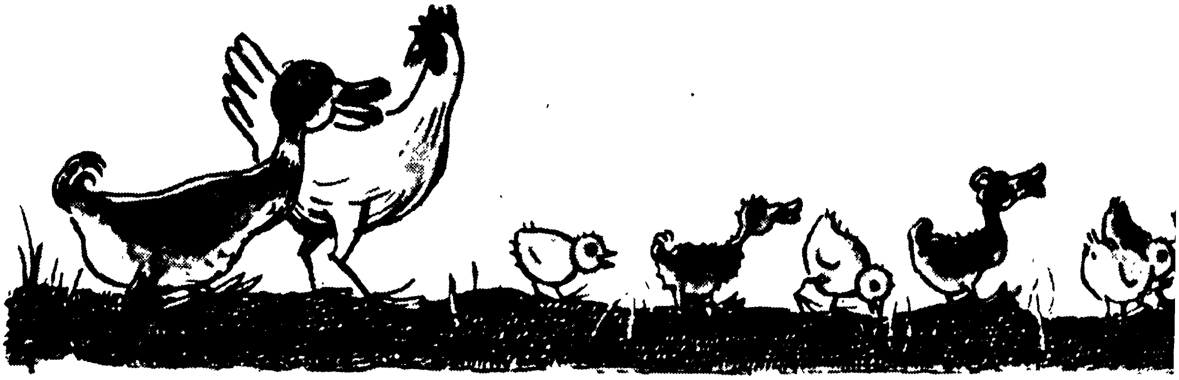

बत्तख के एक बच्चे ने एक चूज़े को अपनी पीठ पर बिठाया। दूसरे ने दूसरे चूज़े को बि

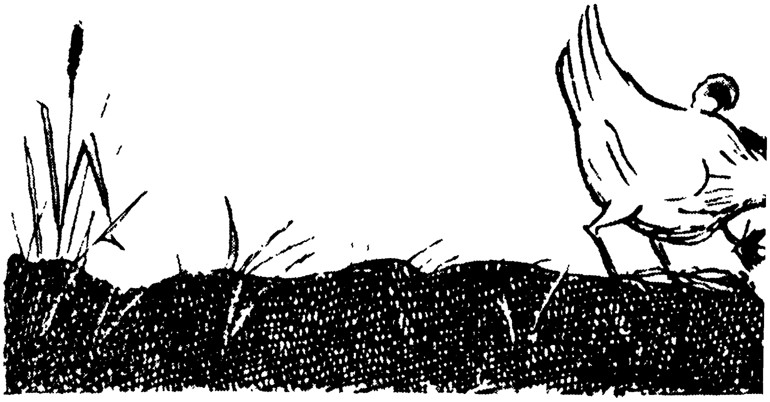

फिर माँ बत्तख ने मुर्गी माँ को अपनी पीठ पर

वैसे मुर्गियों के लिए ताल

दोस्त

र तीसरे ने तीसरे चूज़े को।

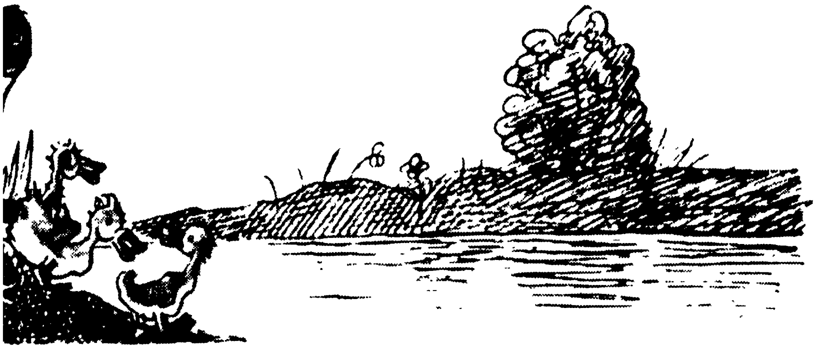

और वे सब के सब चल दिए तालाब की सैर करने।

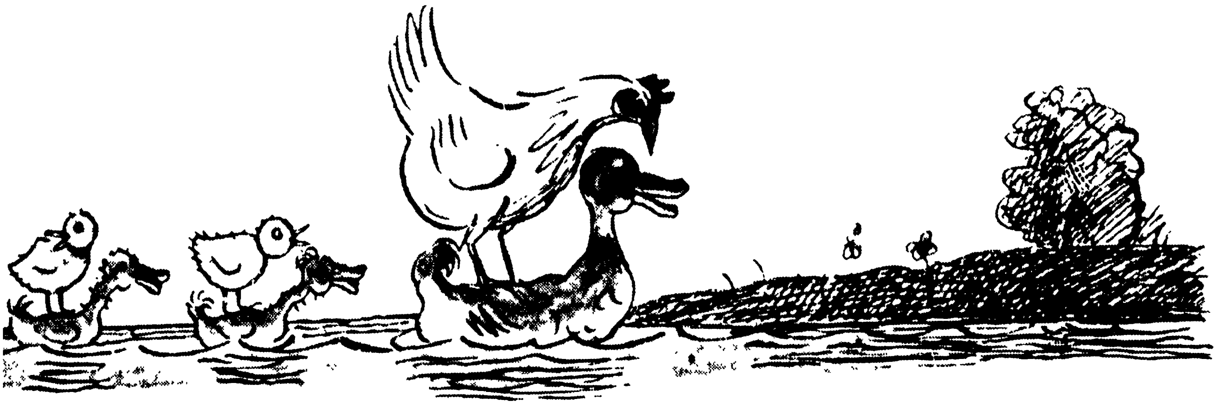

करना काफी मुश्किल काम है। पर अगर आपकी दोस्त बत्तख हों,तो मुश्किल भी आसान है।

चित्र एवं कहानी : निकोलाई रादलोव

कविता, कहानी लिखो

चकमक के अप्रैल, 1999 अंक में हमने यह चित्र छापा था। तुम सबको इस पर कोई कविता या कहानी लिखकर भेजनी थी। तुम्हारी ढेर सारी रचनाएँ हमारे पास आई हैं। यूँ तो सभी रचनाएँ काफी अच्छी हैं। पर उनमें से भी कुछ, जो बहुत अच्छी लगीं, यहाँ प्रकाशित की जा रही हैं। उम्मीद है तुम्हें भी इन्हें पढ़कर मजा आएगा।

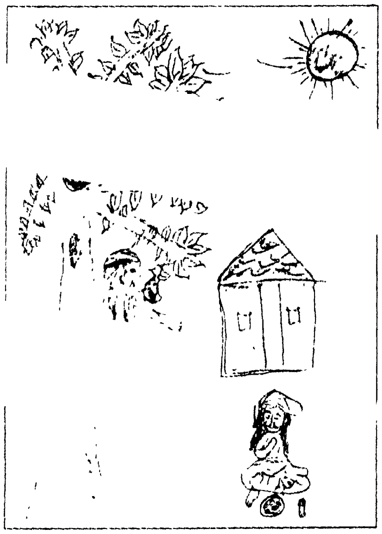

♦ दीपसिंह, पाँचवीं

अपना घर

बन्दर तो बन्दर है होता,
नहीं बनाता अपना घर है।
उछल-कूद पेड़ों पर करता,
इसीलिए तो वह बन्दर है॥

पक्षी बना घोंसला रहता,
अपने अंडों को है सेता।
दिनभर बाहर दाना चुगता,
शाम ढले घर की सुधि लेता॥

रोटी, कपड़ा औ मकान के,
बिना नहीं है यहाँ गुजारा।
बन्दर बेचारा क्या जाने,
अपना घर है सबको प्यारा॥

♦ सुषमा तिवारी, कोरबा, म.प्र.

बीरबल, बन्दर और अण्डे

एक बहुत पुरानी बात है। एक बार अकबर ने बीरबल को जंगल में भेजा। अब बीरबल चलते-चलते थक गया। वहाँ एक पेड़ था। वहाँ जाकर बीरबल बैठ गया। वहाँ बीरबल को बहुत अच्छा लग रहा था। बीरबल ने पेड़ पर देखा कि एक डाली पर बन्दर बैठा है। वहीं पर बीरबल ने देखा कि चिड़ियों के अण्डे रखे हैं। बीरबल को अण्डे बहुत अच्छे लगते थे। उसके मुँह में पानी आ गया। उसने बन्दर से बोला वो देख, वहाँ चार अण्डे रखे हैं न, वो चार अण्डे ले आ। बन्दर पेड़ पर चढ़ा और जल्दी से ले आया। बीरबल ने खा लिए उसके बाद बीरबल ने बन्दर से कहा कि तू बहुत अच्छा है।

♦ शिखा खण्डेलवाल, चौथी, होशंगाबाद, म

बन्दर काका

एक बार बन्दर काका
आए खेत में।
सोचा शायद मिल जाए
थोड़ा खाना।
पर मैं बिल्कुल न माना
मैंने न दिया उनको खाना
इसलिए ज़ोर से गुर्राए
पेड़ों पर उछलकूद करके
वो मेरे पास आए।
मैंने उनको दिखाया डंडा
सोचा शायद डर जाएँगे।
पर बन्दर काका थे पूरे ढीठ
न माने जब तक
न ले भागे वो खीरा
खीरा खाकर ही वे
तृप्त हो पाए।
थोड़ी देर बाद वे
पेड़ पर आराम करते
नज़र आए।

♦ आकाश भारद्वाज, रामपुरा, मंदसौर, म.प्र.

♦ महेश बोडाने, दूसरी, देवास, म.प्र

घर और घोंसला

हल्का नीले रंग का आकाश नज़र आ रहा था। कहीं-कहीं बादलों के कुछ-कुछ धूमिल टुकड़े नज़र आ रहे थे। ऐसे सुहाने मौसम में आकाश में अपना प्रकाश बिखेरता हुआ सूर्य दिखाई दे रहा था। बहुत दिनों के बाद धूप खिली-खिली-सी थी। और इस पूरे वातावरण में सुगन्धित हवा बह रही थी।

इस खुले आकाश के नीचे एक छोटा-सा घर था। इस घर में दो छोटी-सी खिड़कियाँ और एक दरवाज़ा था। इस घर में एक आदमी रहता था। इतने अच्छे मौसम में उसका मन बाहर बैठकर भोजन करने को किया। उसके घर के बगल में ही एक हरा-भरा पेड़ था। उसमें एक चिड़िया रहती थी। उसने चार अण्डे दिए थे। उसके बाद वह अपने लिए खाना ढूँढने चल दी। उसी समय वह आदमी अपना भोजन लेकर बाहर आया। जैसे ही उसने खाने के लिए रोटी का एक टुकड़ा तोड़ा, उसने उस चिड़िया को चीखकर आते हुए देखा, फिर उसने उस पेड़ की तरफ देखा। पेड़ की डाल से एक बन्दर नीचे की ओर उतर रहा था। चिड़िया और उस आदमी दोनों को यह भ्रम हुआ कि बन्दर अण्डों को फोड़कर भागा जा रहा है। पर उनका ये भ्रम तब दूर हुआ जब उन्होंने देखा कि अण्डे सही-सलामत हैं। और बन्दर वहाँ खाने की तलाश में आया है, क्योंकि वह बहुत भूखा था।

यह सब देखकर उस आदमी ने अपना खाना उस बन्दर को खिला दिया। चिड़िया अपने अण्डों को सही-सलामत देखकर बहुत खुश हुई। वह आदमी चिड़िया की खुशी देखकर खुद भी खुश हुआ। और वो बन्दर खाना खाकर बहुत खुश हो गया। इस प्रकार एक बार फिर से मौसम सुखद हो गया।

♦ मनु पाण्डे, अल्मोड़ा, उ.प्र.

शिकारी, बन्दर और तोते की मित्रता

एक समय की बात है कि एक गाँव के बाहर एक किसान रहता था। उस किसान का नाम श्यामू था। श्यामू के एक लड़का और श्यामू की पत्नी थी। श्यामू जल्दी ही बूढ़ा होकर मर गया। श्यामू के लड़के का नाम जटालू था। जटालू के पिता की मृत्यु के कुछ ही वर्षों बाद श्यामू की पत्नी की भी मृत्यु हो गई। उस समय जटालू चौदह वर्ष का था। अब जटालू अपने घर में रह नहीं सकता था, क्योंकि जटालू की झोपड़ी गाँव से लगभग एक किलोमीटर दूर थी। वहाँ कोई और घर न होने के कारण वहाँ बच्चे नहीं थे।

जटालू एक बार अपनी झोपड़ी से बाहर निकलकर थोड़ी दूर गया तो उसे एक आम की गुठली मिली। जटालू गुठली को लेकर अपनी झोपड़ी के पास आया। उसने झोपड़ी के पास ही एक गड्ढा खोदा और गुठली बो दी। वह रोज गुठली को पानी पिलाता था, जिसके कारण गुठली से पौधा निकल आया। जटालू पौधे को देखकर बड़ा खुश हुआ। जटालू अब पौधे को पानी पिलाने लगा। पौधा धीरे-धीरे बड़ा होकर एक बड़ा पेड़ बन गया और उस पर अब आम लगने लगे। जटालू अब और अधिक खुश हुआ। जटालू रोज आम के पेड़ को पानी पिलाता और आम के फल खाता। आम के फल खाने के लिए वहाँ पशु-पक्षी आने लगे। जटालू ने एक बार सोचा कि यह तो सारे आम खा लेंगे तो मैं क्या खाऊँगा। तो जटालू पशु-पक्षियों को मारकर भगाता। इस प्रकार जटालू शिकारी बन गया।

वहाँ एक बन्दर का बच्चा आया तो जटालू ने उसे पकड़ लिया और पालने लगा। अब बन्दर व शिकारी की दोस्ती हो गई। बन्दर आम के पेड़ पर रहता था। बन्दर रोज आम खाता और शिकारी को भी तोड़कर देता। एक दिन एक तोता आम खाने के लिए वहाँ आया, तो बन्दर उसे पकड़कर शिकारी के पास ले आया। शिकारी ने कुछ दिनों तक तो तोते को पिंजरे में रखा, फिर छोड़ दिया। इस प्रकार अब तीनों की दोस्ती हो गई। तोता व बन्दर तो पेड़ पर रहते थे, लेकिन जटालू झोपड़ी में रहता था। कुछ दिनों बाद तोते ने पेड़ पर अपना घोंसला बना लिया और उसमें अण्डे दे दिए। तोता कहीं घूमने जाता तो बन्दर उसके अण्डों की देखभाल करता। तोता व बन्दर दोनों बाहर घूमने जाते तो शिकारी उन अण्डों की देखभाल करता। इस प्रकार उन तीनों की दोस्ती और बढ़ गई।

◆ रमेश कुमार, जालोर, राजस्थान

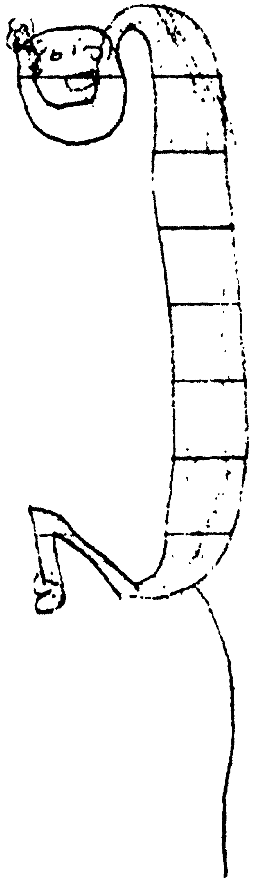

◆ अनिमा शर्मा, पाँचवीं, पाण्डुका, रायपुर, म.प्र.

पेड़

मैं हूँ पेड़ हरा भरा,
लेकिन मैं हूँ तना खड़ा।
मेरी लकड़ी के बनते घर,
मुझ पर रहते हैं बन्दर।
लोगों को मिलता भोजन,
चिड़िया भी रहती ऊपर।
सब लोगों को फल दे देता,
बदले में कुछ भी न लेता।

◆ सोनू चौबे, नवमीं, भोपाल, म.प्र.

शैतान बन्दर

एक बार की बात है। किसी गाँव में एक लड़की रहती थी। उसने एक तोता पाला। लड़की ने अपनी जीविका चलाने के लिए एक आम का पेड़ लगाया। उसमें जो आम फलते वह उन्हें बाज़ार में बेच आती और उस पैसे से अपना भोजन खरीदती। एक तोते ने पेड़ पर घोंसला बनाकर उसमें अण्डे दिए।

एक बार एक बन्दर वहाँ आया। वह पेड़ में जितने आम फलते सारे खा जाता और तोते के अण्डे भी चुरा लेता था। एक दिन लड़की ने बन्दर को बहुत मारा और फिर वो बन्दर वहाँ कभी नहीं दिखा।

♦ शालिनी गुप्ता, छठवीं, बलरामपुर

♦ रुचिर पुरोहित, चौथी, गाँधीनगर, गुजरात

कल्लू बन्दर

किसी जंगल में कल्लू नाम का एक बन्दर रहता था। वह बहुत ही शैतान था। उसे दूसरों को परेशान करने में बहुत मज़ा आता था। उस जंगल में एक गौरैया और ऋषि रहा करते थे। कल्लू उन्हें सदा परेशान किया करता था। जब गौरैया सूर्योदय के समय अपने दाने का इन्तज़ाम करने बाहर चली जाती तो वह चुपके से वहाँ आता और घोंसले में रखे अण्डों से खेलने लगता। जब अण्डे फूट जाते तो वह चुपचाप वहाँ से खिसक जाता। इसी प्रकार जब ऋषि अपने कुटिया के बाहर भोजन करते तो कल्लू चुपके से वहाँ आता और उनकी रोटी लेकर चंपत हो जाता।

गौरैया और ऋषि दोनों इस बन्दर से बहुत परेशान थे। उन्होंने उसे सबक सिखाने की एक तरकीब निकाली। ऋषि ने अपनी कुटिया से बाहर थोड़ी दूर पर एक गहरा गड्ढा बनाया और उस पर नर्म, हरी घास बिछा दी। और उन्होंने वहाँ पर कुछ केले रख दिए। जब कल्लू वहाँ से गुज़रा तो उसने देखा कि घास पर केले रखे हुए हैं और आस-पास कोई नहीं है। यह देखकर वह बहुत खुश हुआ। लेकिन वह जैसे ही केले खाने के लिए घास पर गया तो नीचे गड्ढे में गिर गया। यह देखकर गौरैया और ऋषि दोनों बहुत खुश हुए। वहाँ गड्ढे में कल्लू बार-बार बाहर निकलने की कोशिश करता रहा। लेकिन बार-बार उसे असफलता ही हाथ लग रही थी। अतः वह दुखी होकर वहीं गड्ढे में चुपचाप बैठ गया। जब ऋषि को लगा कि उसे अपने ऊपर बहुत पछतावा हो रहा है तो उन्हें उस पर दया आ गई और उन्होंने रस्सी की सहायता से उसे बाहर निकाल दिया।

राग़िनी मिश्रा, आठवीं, गोमती नगर, लखनऊ उ.प्र.

नटखट बन्दर

एक पेड़ था। उस पर एक चिड़िया और एक बन्दर रहता था। उस चिड़िया के चार अण्डे थे। उस पेड़ के पास एक घर था। उस घर में एक आदमी रहता था। वह रोज सुबह उठकर घूमने जाता था। वह रोज ताजे फल खाता था। वह बन्दर था। वह बहुत उछलकूद करता था। वह नटखट भी था।

♦ सारिका चौरे, छठवीं, इटारसी, म.प्र.

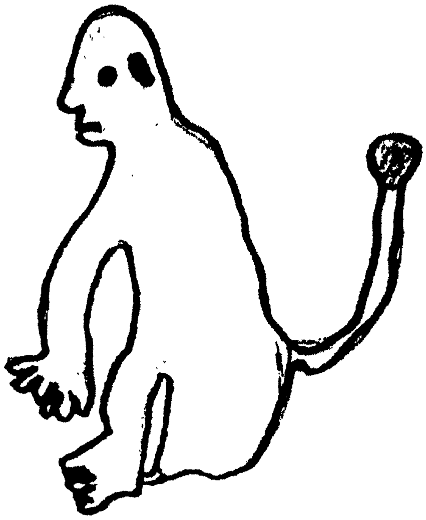

सुनिता फिलोमिना, तीसरी, भोपाल

मेरा बन्दर

कितना अच्छा, कितना प्यारा
ये बन्दर सारे जग से न्यारा
पेड़ पर लटककर नाच दिखाता
संग मेरे रोटी भी खाता
सबका मन है लुभाता
यह नित नये करतब दिखाता
ये बन्दर मेरा प्यारा
सारी दुनिया से ये न्यारा

♦ गोविन्दसिंह चौहान, दसवीं, रामपुरा, नीमच, म.प्र.

बन्दर से डर

एक घर था। उसमें एक गरीब माँ और उसकी बेटी रहती थी। उनके घर के आँगन में एक आम का पेड़ था। उनके आँगन में बहुत सारी चिड़िया चहकती थीं। एक बार उसकी लड़की आँगन में बैठकर खाना खा रही थी। अचानक एक बन्दर उनके आम के पेड़ पर चढ़ गया और आम तोड़ के खाने लगा। वह लड़की डर गई। उसकी माँ ने बन्दर को रोटी दी और बन्दर भाग गया। उसकी माँ ने उसे समझाया और कहा कि बन्दर को अगर चिढ़ाएँ तो ही वो अपने को काटता है। तब से वह बन्दर से नहीं डरती।

दिविशा गुप्ता, तीसरी, इन्दौर, म.प्र

इस बार चकमक में तुम्हारे लिए एक और मौका है अपने मन की बात लिखने का। पेज 12 पर 'मन की बात, चकमक के साथ' देखो और लिख भेजो वह सब जो तुम इन विषयों पर कहना चाहते हो।

उज्जैन में कला शिविर सम्पन्न

कई बच्चे पूरे वर्ष भर परीक्षा पास करने की फिक्र में पढ़ाई करने के सिवाय कुछ भी नहीं कर पाते हैं। साल भर में केवल एक-दो दिन का वार्षिक उत्सव छात्र-छात्राओं का मन बहलाकर खत्म हो जाता है। जैसे-तैसे पढ़ाई कर पास हो गए तो ठीक और अगर फेल हुए तो ...। खैर यह सब तो चलता ही रहता है। एक मौका ज़रूर मिलता है, जो होता है गर्मी की छुट्टियों का। हमारे उज्जैन शहर में इन छुट्टियों में अलग-अलग संस्थाओं द्वारा कला शिविरों का आयोजन किया जाता है। इस शृंखला में इस वर्ष भी एकलव्य के बाल गतिविधि केन्द्र उज्जैन ने **'सीखने का आनन्द, 99'** का आयोजन किया।

9 से 18 मई, 1999 तक के दस दिवसीय कला शिविर में करीबन 140 बच्चों ने भाग लिया। प्रथम दिन परिचय खेल खिलवाकर शुरूआत की गई। फिर कहानी एवं नाटक लेखन का काम बच्चों ने बड़ी लगन और खुशी से किया। दूसरे दिन धागे पर चलते हाथी ने बच्चों को बहुत उत्साहित किया। बच्चों को सोचने पर मजबूर होना पड़ा कि आखिर इन धागों की सहायता से हाथी कैसे चलता है। तीसरा दिन था 'गिरते कार्ड खिलते फूल' बनाने का। इस दिन बच्चों को पुट्ठे और रंगीन कागज़ देकर बहुत ही मज़ेदार तरीके से 'गिरते कार्ड खिलते फूल' बनवाए, जो बनने के बाद जादू से लगते थे।

चौथा दिन हैण्डीक्राफ्ट का था। इसमें बड़ी लड़कियों की संख्या बढ़ गई थी। इस दिन जहाज बनाना सिखाया। जिसमें बच्चों ने अलग-अलग प्रकार की नाव बनाई जैसे पाल वाली नाव, मकान वाला जहाज़, झण्डे वाली नाव आदि। शिविर के पाँचवें दिन बच्चों को जानकारी दी कि हम आज जो बनाने वाले हैं, वह एक बहुत ही मज़ेदार चित्र है। वैसे यह सब रंगीन कागज़ को देखकर ही पता चल रहा था। शुरू में बच्चों को पहले बने हुए, पाँच तरह के चेहरे दिखाए गए जो बहुत मनमोहक थे। साथ ही यह भी बताया कि चेहरे कैसे बनते हैं। बाद में चेहरे के फर्मे (ढाँचा) प्रत्येक टोली में दिए गए, जिसे टोली का हर बच्चा अपने कागज़ पर उतार रहा था। सभी बच्चों ने फर्मे से उतारी आकृतियों को काटकर एक दूसरे रंग के कागज पर फेविकोल से चिपकाकर चेहरों की तस्वीरें बनाईं। जिन बच्चों को बनाने में देरी हो गई थी, उनका पाँच बजने के बाद भी घर जाने का मन बिल्कुल नहीं था। बच्चे कहने लगे कि काम पूरा होगा तभी घर जाएँगे।

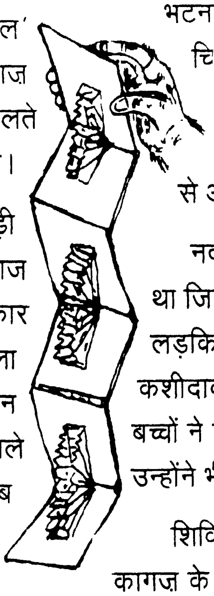

छठा दिन शिविर में विज्ञान का था। इस दिन कम लागत के विज्ञान प्रयोग कराए, जिसमें बच्चों से रंगों का मेला बनवाया गया। इससे बच्चों को प्राथमिक रंगों के बारे में जानकारी दी गई और कई अन्य रोचक प्रयोग बच्चों ने खुद करके देखे।

सातवाँ दिन होली के दिनों की याद लेकर आया। क्योंकि वह रंगों से खेलने का दिन था। इसके बाद शुरू हुआ कपड़ों पर छपाई का काम अर्थात 'बंधेज प्रिंट'। रंग घोलकर टोली में दिया गया, कपड़ा और धागा बाँटा गया। सभी बच्चों ने अपने कपड़े और हाथों को रंगों में तर कर लिया और बना डाले रंग-बिरंगे रूमाल।

आठवाँ दिन भी बच्चों के मन का दिन था, क्योंकि इस दिन चित्रकला जो होने वाली थी। गुरूजी श्री विष्णु भटनागर ने बच्चों की भाषा में बातें करते हुए चित्रकला की बुनियादी जानकारी दी। और बाद में ड्राइंग बोर्ड पर कुछ चित्र बनाकर भी बताए, जिनका अवलोकन कर बच्चों ने अपनी मर्जी, से अपने ढंग से बहुत ही सुन्दर-सुन्दर चित्र बनाए।

नवाँ दिन भी बच्चों के लिए उतना ही आनन्ददाई था जितने की बीते हुए दिन। सारे बच्चों ने ख़ासकर लड़कियों ने बहुत ही सुन्दर तरीके से कपड़े पर कशीदाकारी कर मनमोहक रूमाल बनाए। शायद जिन बच्चों ने कभी सुई-धागे को हाथ भी नहीं लगाया होगा, उन्होंने भी जो कशीदाकारी की वह काबिले-तारीफ थी।

शिविर के समापन कार्यक्रम में बच्चों द्वारा बनाए गए कागज़ के रंग-बिरंगे फूलों से बच्चों व बड़ों ने आए हुए अतिथियों का स्वागत किया। शिविर के दौरान ''डॉक्टर के नाम एक मजदूर का पत्र'' नामक कविता को नाटक के रूप में तैयार किया गया। बच्चों ने अंतिम दिन इस नाटक की प्रस्तुति की।

रपट : प्रेम मनमौजी

खेल कागज़ का

उछलने वाला मेंढक

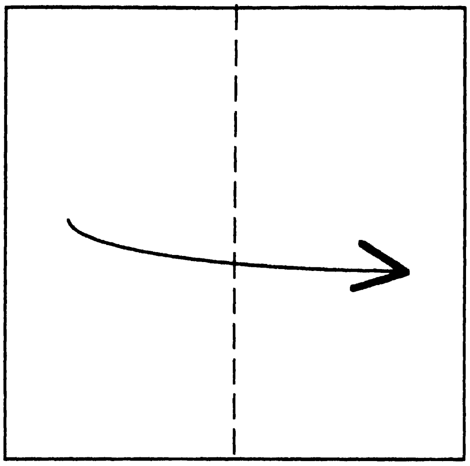

1. एक वर्गाकार कागज़ लो। उसे बीच से मोड़ लो।

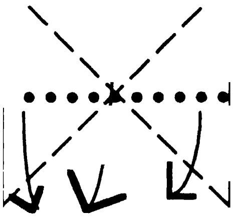

. अब टूटी रेखाओं पर से मोड़ बना लो। बिंदु वाली रेखा पर से अन्दर की ओर मोड़ते हुए टूटी रेखाओं के मोड़ ठीक से बन पाएँगे।

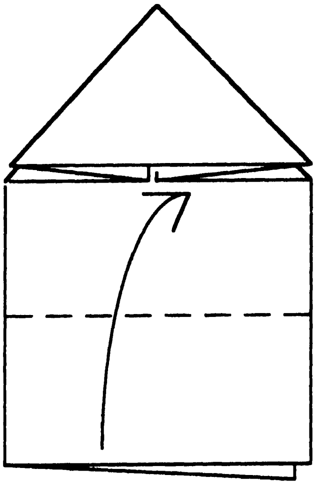

3. चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाओ।

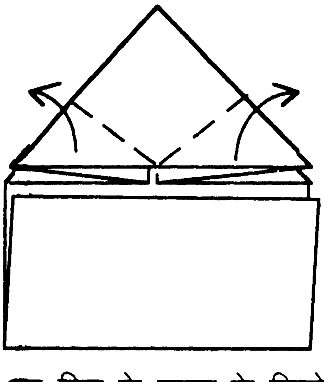

4. अब चित्र के ऊपर के तिकोने हिस्से की ऊपरी परत को टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।

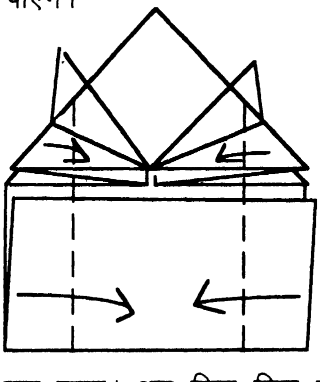

5. इस तरह। अब फिर चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर तीर की दिशा में मोड़ बनाओ।

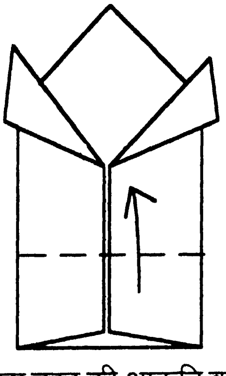

6. कुछ इस तरह की आकृति बन गई होगी। टूटी रेखा पर तीर की दिशा में मोड़ बनाओ।

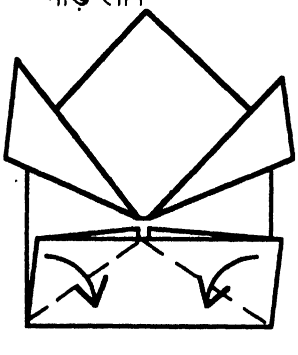

7. जो हिस्सा मोड़कर ऊपर ले गए थे, उसके दोनों किनारों को मोड़ते हुए नीचे लाओ।

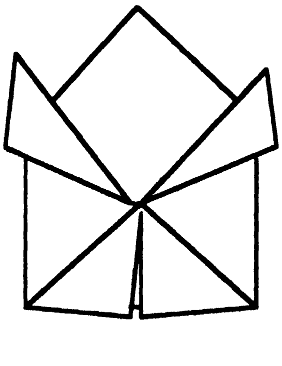

8. इस तरह की आकृति बनेगी।

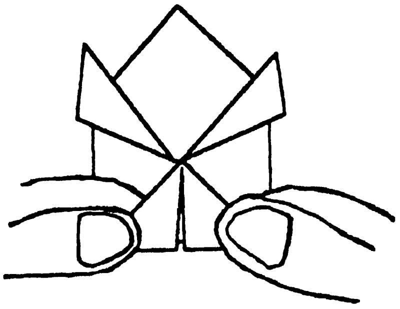

9. इस चित्र में दिखाए तरीके से आकृति के निचले मुड़े सिरों को पकड़कर बाहर की ओर खींचो।

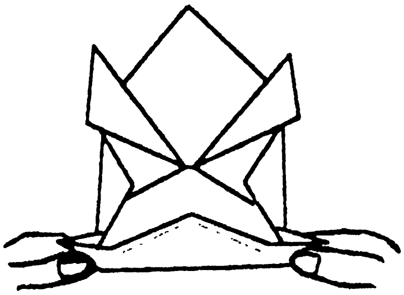

10. इस तरह। अब पकड़े हुए दोनों कोनों को दबाकर मोड़ पक्के कर दो।

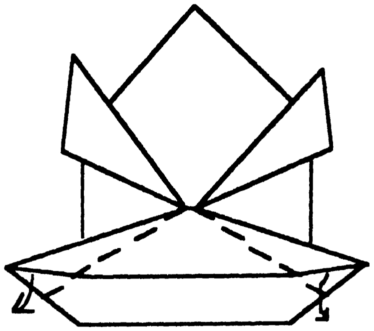

11. इस प्रकार। इसी हिस्से के दोनों कोनों को टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ो।

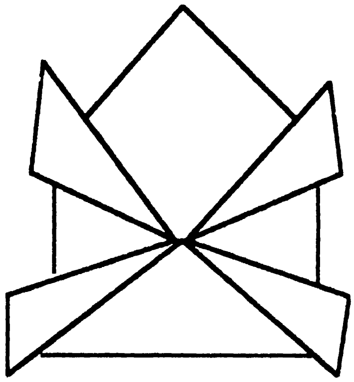

12. इस तरह की आकृति बन जाएगी। आकृति को पलट लो।

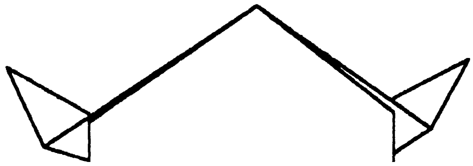

13. अब चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से मोड़ बनाते हुए, आकृति के ऊपरी हिस्से को नीचे लाओ। फिर इसी हिस्से को बिंदु वाली रेखा पर से मोड़ते हुए वापस ऊपर की तरफ ले जाओ।

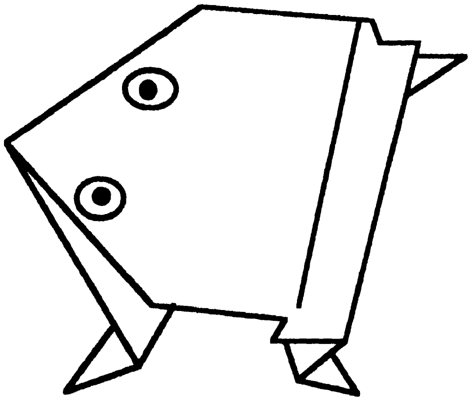

14. इस तरह के मोड़ बनाना हैं। बस तैयार है कूदने वाला मेंढक। मेंढक को पीछे से दबाकर छोड़ो। देखो भाग न जाए।

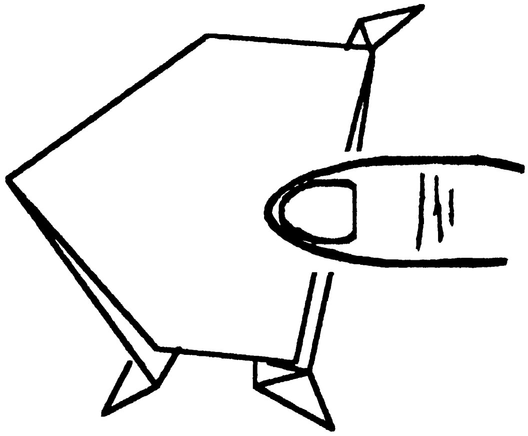

हमारे शिक्षक : 10

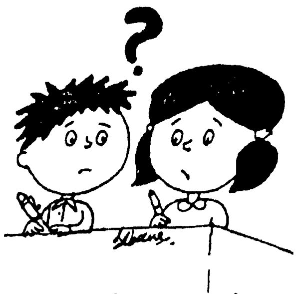

अब तक तुम इस शृंखला में कई लोगों से उनके शिक्षकों की यादें पढ़ चुके हो। तुम भी अपने माँ-पिताजी से और दूसरे बड़े लोगों से कहो, कि वे अपने शिक्षकों के बारे में याद करके कुछ लिखें।

आमूपुरा, होशंगाबाद के रविशंकर अजनेरिया ने अपने पिता से उनके शिक्षक और स्कूल के बारे में पूछा। रवि जो कुछ जान पाया, वह उसने हमें लिखकर भेजा है। इसके अलावा एकलव्य की वीणा भाटिया ने अपने स्कूल और अपनी शिक्षक के बारे में लिखा है। तुम भी पढ़ो।

हमारे ज़माने के शिक्षक

हमारे ज़माने के शिक्षक मारते बहुत थे। एक दिन की बात है, मैं स्कूल गया। एक लम्बी मूँछ वाले मोटे मास्साब हमें गणित पढ़ाते थे। गणित में पहाड़े गिनती एक बार पढ़ाकर फिर लड़कों से पढ़वाते थे। पहाड़े पढ़वाते थे, आधा-पौना वाले। मेरी बारी आई, मैं आधा-पौना पहाड़ा पढ़ रहा था। बीच में कुछ गलत बोल दिया। मास्साब के हाथ में मोटी बेशरम की हरी डंडी थी। उन्होंने मेरे दोनों हाथों पर मारा। मेरे दोनों हाथ लाल हो गए।

मैंने घर आकर माँ को बताया। तो माँ ने भी मुझे मारा।

हमारे मास्साब हमसे पहाड़े पूछते थे। जैसे कि 'कितने पंजे बीस?' जिसने गलत बताया उसको मारते। अगर वह घर भाग जाए तो मास्साब उसके घर जाकर उसके माँ-बाप के सामने मारते। और उसके

माँ-बाप भी उसे मारते और फिर स्कूल भेजते थे।

हमारे ज़माने में छुआछूत बहुत होती थी। दिनभर प्यासा रहना पड़ता था। सब लड़कों से दूर रहना पड़ता था। इस कारण मैं स्कूल में आगे नहीं पढ़ सका। मैंने चौथी तक पढ़ाई की फिर पिताजी के साथ काम करने लगा। फिर मैं घर पर ही रहकर पढ़ता रहा।

आज मैं सब कुछ पढ़ लेता हूँ। गणित अपने लड़के से जल्दी कर लेता हूँ। अपने लड़कों को बचपन में मैंने ही घर पर पढ़ाया। यह है हमारे ज़माने की पढ़ाई।

● गरीबदास अजनेरिया, आमूपुरा, होशंगाबाद, म. प्र.

अण्डरस्टैंड

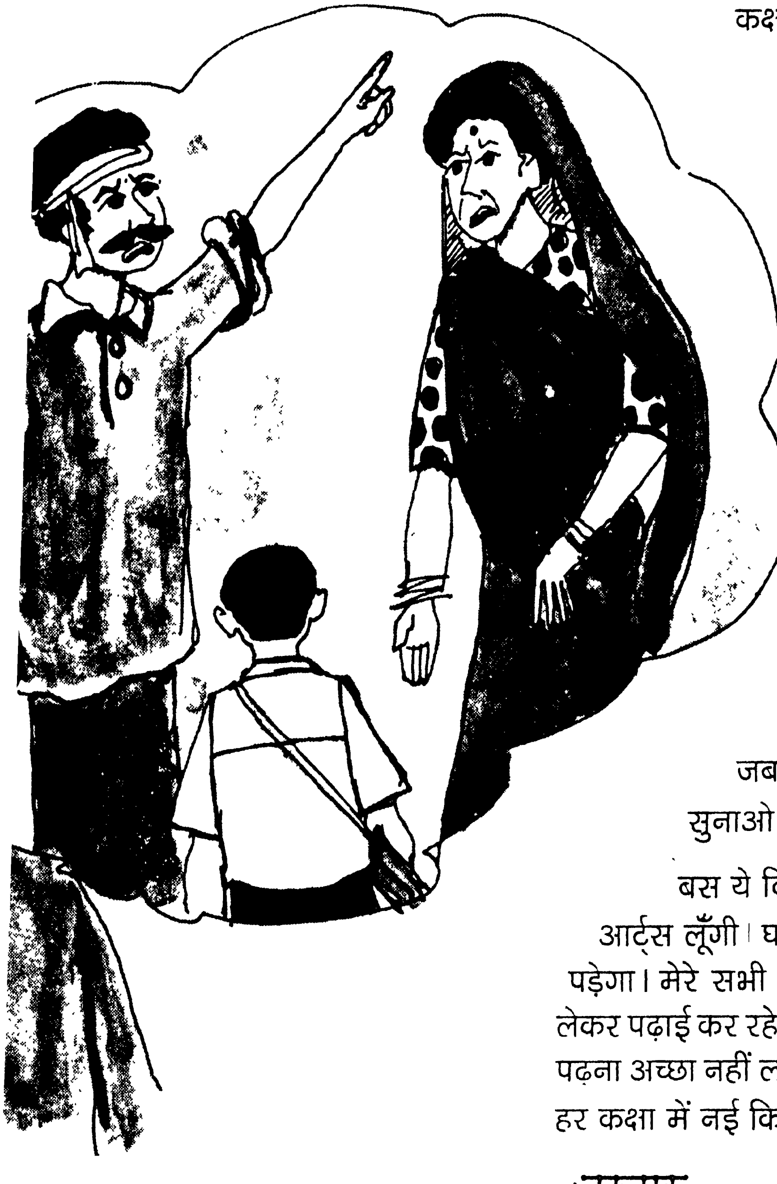

बात उन दिनों की है जब मैं आठवीं पास कर नौवीं कक्षा में गई थी। सभी विषय नए थे। कुछ समझ आते, कुछ नहीं। कोई कहता विज्ञान विषय लो, डॉक्टर बन जाओगी। डॉक्टर नहीं, तब तो चश्मा लगाना पड़ेगा। गणित लो, इंजीनियर बन सकती हो। पर गणित तो बहुत कठिन है। फिर मुझे अच्छा भी नहीं लगता। कुछ ऐसे विषय सुझाओ जिनमें पढ़ना कम पड़े। तब तो आर्ट्स ले लो। रटो और नम्बर ले लो। उसे पढ़कर क्या बनेंगे? 'मैडम'। अच्छा तो ये विषय ठीक है। मैडम बनना मुझे अच्छा लगा। जब मन हो बच्चों को पढ़ाओ, जब मन हो मारो, डाँटो या कहानी सुनाओ

बस ये विषय अच्छा है। मैंने तय कर लिया, आर्ट्स लूँगी। घर में सबने मना किया, खूब रटना पड़ेगा। मेरे सभी भाई-बहन विज्ञान व गणित विषय लेकर पढ़ाई कर रहे थे। मैंने फॉर्म भर दिया। मुझे ज़्यादा पढ़ना अच्छा नहीं लगता था। माँ ने भी बहुत डाँटा, 'अब हर कक्षा में नई किताबें लेकर दो।' नहीं तो मुझसे जो

बड़ी वहन थी उसकी किताबें मेरे काम आ जाती थीं।

नौवीं कक्षा में पढ़ते हुए कुछ ही दिन हुए थे कि अंग्रेज़ी की नई मैडम आईं। फर्राटे से अंग्रेज़ी बोलती थीं। नाम था मिस जूली। सब बच्चे बताते कि मैडम हिन्दी नहीं बोलतीं।

हमारी कक्षा में पढ़ाते हुए उन्हें करीब बीस दिन हो गए। पर हम उनकी कोई बात ठीक से नहीं समझ पाते थे। लेकिन पाठ के अन्त में या प्रश्न उत्तर के बाद जब वो कहतीं ' अंडरस्टैंड (understand यानी समझ गए?)' बस हम सब सिर हिला देते। ये एक शब्द ही हमें समझ आता था।

हमारा हर माह में एक बार टेस्ट होता था। अंग्रेज़ी के पहले टेस्ट में तीन प्रश्न आए। मैंने व मेरी सहेलियों ने पहले ही तय कर लिया था कि उत्तर की जगह क्या लिखना है। हमने उत्तर की जगह लिखा understand.

मैडम ने हम सबको बुलाया। हम डरते हुए गए और मैडम से कहा कि हमें आपकी अंग्रेज़ी समझ नहीं आती।

मैडम ने कहा कि ये बात क्लास में कहनी थी। हमने कहा आप अंग्रेज़ी में ही हमें डाँटतीं, इस डर से नहीं कहा।

मैडम ने हमें डाँटा नहीं, बस मुस्करा दीं। फिर वो जब भी कक्षा में आतीं धीरे-धीरे पढ़ातीं और कहतीं समझे या नहीं।

मेरी वो मैडम आज भी मुझे भोपाल में जहाँ भी मिल जाती हैं तो कहती हैं, 'अच्छा वो अंडरस्टैंड!'

● वीणा भाटिया, भोपाल

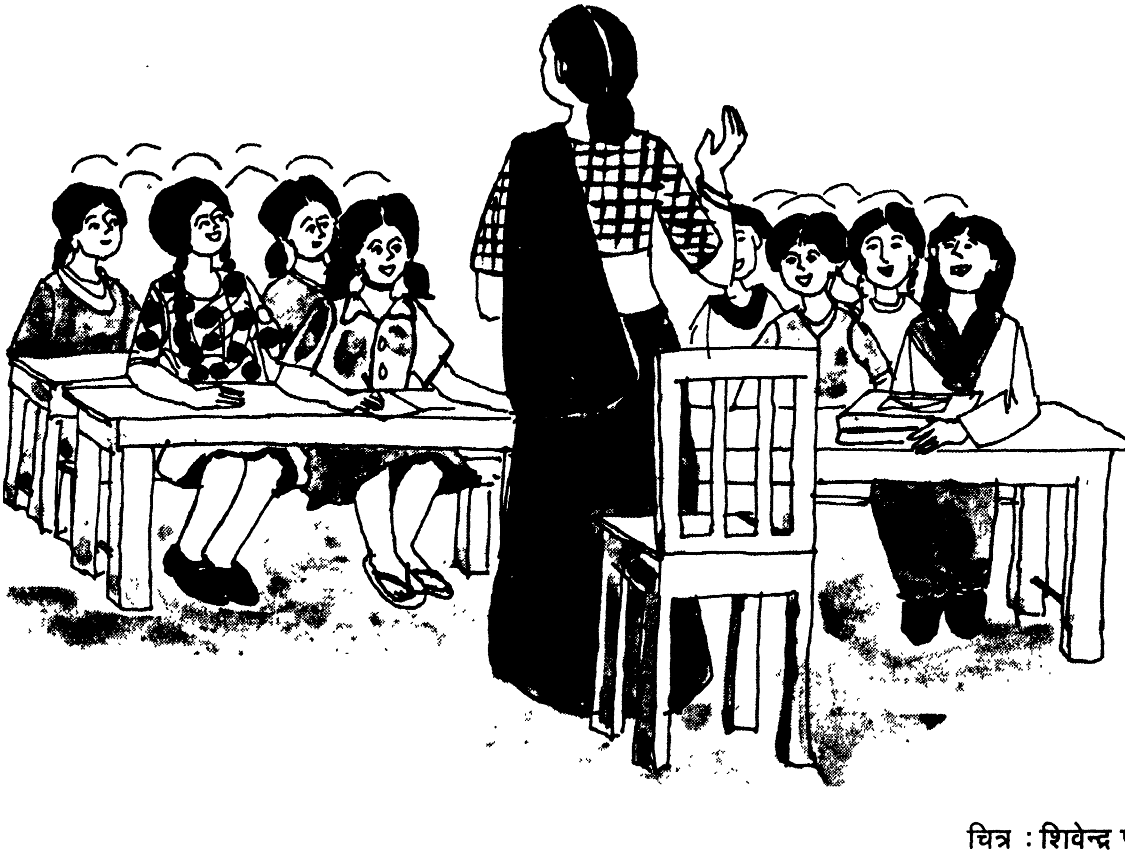

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

वर्ग पहेली - 96

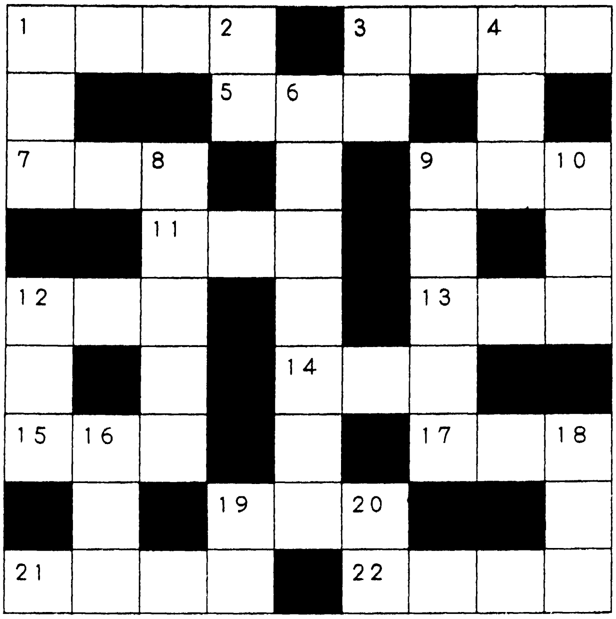

संकेत : बाएँ से दाएँ

1. बताकर ही खा में ढूँढो हिसाब-किताब लिखने की पुस्तिका (2,2)
3. घराना (4)
5. कब तक बाड़ी में जूना-पुराना का व्यापार करेगा? (3)
7. अरबी में दक्षिण दिशा (3)
9. मान-सम्मान में मन लगा है (3)
11. मुर्गीघर या कबूतरखाना (3)
12. अच्छा हल पलटो तो निपटारा हो जाए (3)
13. पिस्तौल न दागो की उठापटक में प्रेमचन्द का एक उपन्यास (3)
14. बड़ा व ओहदा के मेल में शहर खोजो (3)
15. रिमझिम भी और साल भी (3)
17. सीमा, या मान का जोड़ीदार (3)
19. सिरकटे असुर के बीच मैना की पूँछ, एक कारीगर (3)
21. सीन करने में नाक से खून बहने लगा (4)
22. ध्वज पालन में है नाश्ता या कलेवा (4)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. कपड़े का व्यापारी या वाहन बनाने वाली एक कम्पनी (3)
2. इन्तज़ार भी, घूरना भी और आला भी (2)
3. तीन तरफ से घिरा हुआ समुद्र का भाग (2)
4. ला दान कर दे में है बरामदा (3)
6. मुसीबत में पड़ते-पड़ते बच जाना, एक मुहावरा (2,2,3)
8. बहस, वाद-विवाद में है अस्त-व्यस्तता और बौखलाई हुई हालत (5)
9. वह जगह जहाँ व्यापार का सामान जमा रखा जाता है (2,3)
10. बहुत तेज़ चाल (3)
12. एक पक्षी जिसे चकवा-चकवी भी कहते हैं (3)
16. मकर संक्रांति में झूले की पेंग (3)
18. वृंदावन में हँसिया मिलता है (3)
19. संगीत में इनमें से सात का खास महत्व है (2)
20. धूल (2)

श्री मायाराम सोनकर, रूदगाँव, राजनांदगाँव, म. प्र. द्वारा भेजी पहेली पर आधारित

वर्ग पहेली - 96 का हल चकमक के सितम्बर 99 अंक में छपेगा। हल भेजने के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से न काटें। संकेतों के नम्बर डालकर शब्द लिखकर भेज दें। सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक का सितम्बर, 99 का अंक उपहार में भेजा जाएगा।

माथापच्ची

(1)

एक दिन मैं घूमने जा रहा था, तो रास्ते में मुझे एक पुराना सिक्का मिला। घर लाकर मैंने इसे साफ किया और फिर अपने भाई को दिखाया। सिक्के पर एक अस्पष्ट - सा चित्र था और चित्र के नीचे 300 ई.पू. लिखा था।

मैंने अपने भाई से पूछा कि इतना पुराना सिक्का यहाँ कैसे आया?

उन्होंने जवाब दिया कि यह सिक्का 300 ई.पू. का नहीं है और इसका कारण भी बताया। क्या तुम बता सकते हो कि भैया ने किस आधार पर यह बात कही?

(2)

एक स्कूल में वार्षिक परीक्षा के बाद अंकसूची बनाते समय एक शिक्षिका ने दो छात्रों के 10 प्रतिशत अंक कम जोड़े। इस गलती को सुधारने के बाद तीस छात्रों की इस कक्षा का प्राप्तांक औसत 50 प्रतिशत रहा। क्या तुम बता सकते हो कि पहले यह कितना था?

(3)

कागज़ को तोड़ना-मरोड़ना तो तुम्हारा रोज़ का ही काम है। चलो, अब एक और काम करो। एक बड़ा-सा कागज़ लो और इसे मोड़ना शुरू करो। एक बार, दो बार, तीन बार, ...।

देखें! अधिक से अधिक तुम कितनी बार मोड़ पाते हो इसे।

(4)

14, 29, 50, 77, 110,.....

ऊपर ब्याओं की एक श्रेणी दी गई है। इन संख्याओं का बढ़ते क्रम में एक सम्बंध है। इस सम्बंध को खोजकर तुम्हें इस श्रेणी का अगला अंक बताना है।

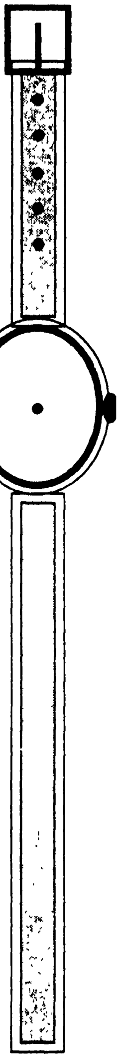

(5)

तुमने कलाई घड़ी को कई बार देखा होगा और शायद पहनते भी होगे। क्या तुम बता सकते हो कि –

(अ) घड़ी के हर विज्ञापन में घंटे व मिनिट के काँटों की स्थिति एक ही दिखाई जाती है। कौन-सी और क्यों?

(ब) घड़ी में कितने समय के अंतर पर घंटे व मिनिट के काँटे मिलते हैं?

(स) घड़ी में लिखे 17 ज्वेल, 18 ज्वेल, 21 ज्वेल आदि का क्या मतलब है?

(6)

__तुम__ रोज़ अपना चेहरा दर्पण में देखते ही होगे।

क्या तुम जानते हो कि किसी वस्तु का स्पष्ट प्रतिबिम्ब देखने के लिए उसे दर्पण से कम से कम 25 सेंटीमीटर की दूरी पर रखा होना चाहिए।

बता सकते हो कि किसी वस्तु का पूरा प्रतिबिम्ब देखने के लिए दर्पण की ऊँचाई, वस्तु की ऊँचाई से कितने गुना अधिक होनी चाहिए।

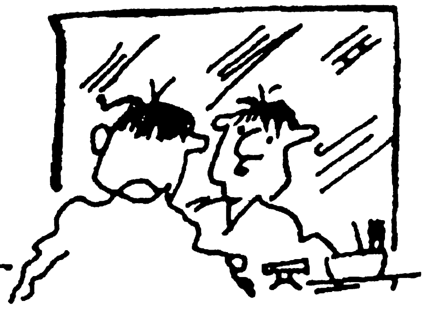

(7)

जब मैं सातवीं में था, तो हमारे एक शिक्षक हमेशा हम सभी से कुछ न कुछ 'माथा-पच्चीनुमा' सवाल पूछते रहते।

एक दिन अचानक मेरा नम्बर आ गया। बोले – 'बताओ, तुम क्या बनना चाहते हो?' मैं इस प्रश्न के लिए तैयार नहीं था, हड़बड़ाहट में बोल दिया – 'डॉक्टर।'

वे फिर बोले, मान लो तुम डॉक्टर बन गए हो। पहले दिन तुमने जिन बीस मरीज़ों को ठीक किया उनकी औसत आयु 27 वर्ष थी। दूसरे दिन जिन 7 मरीज़ों को ठीक किया उनकी औसत आयु 15 वर्ष थी। तीसरे दिन तुमने 34 मरीज़ों को ठीक किया उनकी औसत आयु 28 वर्ष थी।

अब इन तथ्यों के आधार पर बताओ डॉक्टर की आयु क्या होगी?

मैंने अपने शिक्षक को तो खैर बता ही दिया। तुम होते तो क्या बताते?

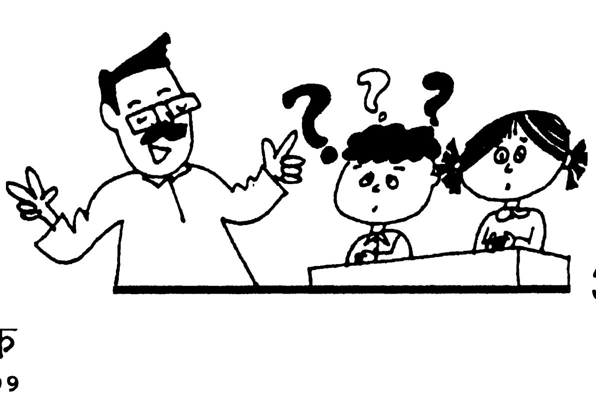

गर्मी के दिन

बात अभी की है। हमारी परीक्षा पूर्ण हो चुकी थी। एक दिन हमारी छोटी बहन, रानी ने कहा कि क्यों न हम सब नानाजी के घर हो आएँ। यह बात मम्मी से कही। मम्मी चलने को तैयार हो गईं। मम्मी ने कहा, हम कल चलेंगे। हम सब बहुत खुश हो गए। सुबह हुई, हम सब नाश्ता पानी करके निकल पड़े।

करीब नौ बज रहे थे। हमारे नाना का गाँव पाँच किलोमीटर दूर था। हम पैदल ही चल पड़े। हमने आधी दूरी तय कर ली थी। परन्तु अधिक गर्मी के कारण मेरी छोटी बहन रानी को अचानक चक्कर आ गए। और वह नीचे गिर गई। हमारे पास पानी नहीं था। पापा ने कहा रानी को संभालो मैं पानी लेकर आया। पापा पास ही के खेत में गए। वहाँ पर कुआँ नज़र आया। पापा हमारे लिए पानी लाए। हम सबने मिलकर रानी को पानी पिलाया। और हम सबने भी पिया। रानी को होश आ गया। हम वहाँ से निकल पड़े। और हम नानाजी के घर पहुँच गए। हमने नानाजी और नानीजी को सारी बात सुनाई। सारी बात सुनकर उन्होंने कहा, इन दिनों गर्मी अधिक होती है। इसलिए हमें ज़्यादा पैदल नहीं चलना चाहिए।

● **मंदाकिनी भिमराव वानखेड़े, बुरहानपुर, खण्डवा, म. प्र.,**

रोने वाला दोस्त

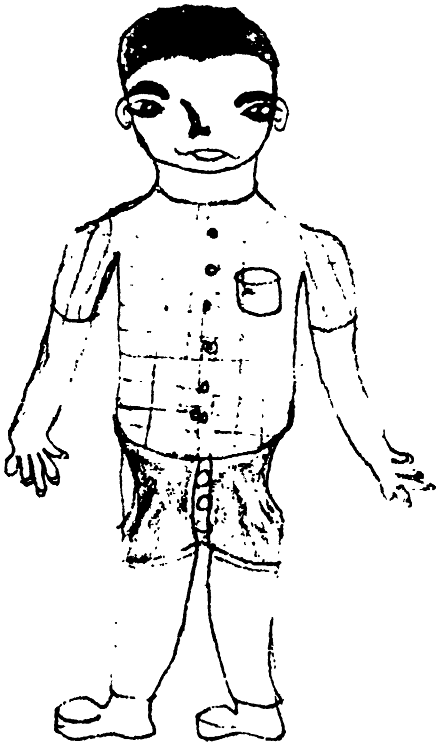

मेरा एक दोस्त था। वह बहुत रोता था। उसका नाम था, निकोलस। उसके माता-पिता उसे बचपन में ही छोड़कर चले गए। उसकी सौतेली माँ उसे खूब मारा करती थी। एक दिन वह अपने घर से भागकर मेरे घर आया। मैंने समझाया, कि माँ चाहे सौतेली माँ ही हो वह माँ के समान ही होती है। फिर भी उसने मेरी बात नहीं मानी। वह एक दिन घर छोड़कर चला गया और उसकी माँ मेरे घर आई। और अचानक मुझे डाँटने लगी।

मैंने पूछा, आखिर बात क्या है?

उसने कहा, तुमने ही मेरे बेटे को भड़काकर भगा दिया है। अब उसे ढूँढने वाले तुम्हीं हो। अब मैं क्या करूँ?

● **संतोष कुमार, दस वर्ष, नवहट्टा, सहरसा, बिहार**

● **धीरेन्द्र कुमार द्विवेदी, दस वर्ष (पता नहीं लिखा)**

''तेरी तो''

यह कक्षा चौथी की बात है। एक दिन हम लोगों की प्रार्थना चल रही थी। हम लोग लाईन में खड़े हुए थे। मैं व मेरी सहेली, जो मेरे पीछे खड़ी थी, आपस में लड़ रहे थे। मैंने उसे चेतावनी दी की अब अगर मुझे मारा तो मैं उसका बुरा हाल करूँगी। और फिर मैं अपनी आगे वाली सहेली से बात करने में मस्त हो गई। तभी मुझे किसी ने पीछे से मारा। मैंने समझा कि वह वही सहेली है जो मेरे पीछे खड़ी थी। मैंने तुरन्त पलटकर कहा – ''तेरी तो'' और मेरा मुँह खुला का खुला ही रह गया। क्योंकि सामने मेरी मैडम खड़ी थीं। उन्होंने मुझे घूरकर देखा और चली गईं।

● **निक्की सिंह, छठवीं, भोपाल, म.प्र.**

हमारे घर के पास में बंगाली चौराहा है। उसमें शराब की दुकान खुल गई। फिर वहाँ के लोगों ने और बच्चों ने मिलकर उसका विरोध किया। फिर वे लोग सड़क के सामने खड़े हो गए जिससे सारे वाहन रुक गए। उसके बाद उन्होंने सरकार को चिट्ठी लिखी। फिर सब लोगों से दस्तखत करवाए। और फिर पेपर में पढ़ा कि दुकान हट गई है।

● **चित्र एवं रचना : उदिता पटेल, चौथी, इन्दौर, म.प्र.**

खेल खेल में

बताओ कौन-सी उँगली है?

मदारी : बोल जमूरे।
जमूरा : हाँ, उस्ताद।
मदारी : साहब को अपना कमाल दिखलाएगा।
जमूरा : दिखाऊँगा।
मदारी : जो माँगूँगा लाएगा।
जमूरा : लाऊँगा।
मदारी : जो पूछूँगा बताएगा।
जमूरा : बताऊँगा।
मदारी : तो बता साहब ने आज क्या खाया है?
जमूरा : उस्ताद! साहब की
मेमसाब से लड़ाई है,
साहब के हिस्से,
सिर्फ हवा आई है।
मदारी : चुप! साहब की,
पोल पट्टी खोलता है,
कितना समझाया,
फिर भी सच ही बोलता है।
जमूरा : जो आपने पूछा,
मैंने बताया, हुजूर
माफ कीजिए, इसमें
मेरा क्या कसूर।

ऐसे सम्वादों वाला मदारी-जमूरे का खेल तुम सभी ने कम से कम एक बार तो ज़रूर होगा। तो तुम यह भी जानते होगे कि कैसे मदारी अपने जमूरे से प्रश्न करता है और उतने ही मज़ेदार तरीके से जमूरा मदारी के प्रश्नों का उत्तर देता है।

खेल देखने के बाद तुम घंटों अपने दोस्तों से उसकी चर्चा करते होगे। उसके करतबों की प्रशंसा, उसकी हँसी छुड़ा देनेवाली हरकतें। तुम सोचते होगे कि मदारी और जमूरा दोनों कोई जादू जानते होंगे, वरना कैसे मदारी की हर बात का सही उत्तर जमूरा दे पाता है। मुझे भी एक खेल याद आ रहा है जो मैंने बहुत दिनों पहले अपने गाँव में देखा था।

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

मदारी के वेष में था एक लम्बी-सी दाढ़ी वाला आदमी। ढीले-ढाले कपड़े, हाथ में डमरू और गले में एक हरा रुमाल। और उसके साथ था एक चौदह-पंद्रह साल का लड़का जिसे वह जमूरा कहता था। खेल के बीच-बीच में जमूरा कुछ ऐसी हरकतें करता जिससे बरबस ही हँसी छूट जाती। और इस तरह खेल और मनोरंजक हो जाता था। खेल तो उसने कई दिखाए। एक तुम्हें भी बताता हूँ।

खेल था - 'बगैर देखे उँगली बताना।'

खेल देख रहे लोगों में से किसी एक को मदारी अपने पास बुलाता और फिर उसकी कोई भी उँगली पकड़ता और जमूरा जो कि दूसरी ओर मुँह करके खड़ा था, बता देता कि मदारी ने उस व्यक्ति की कौन-सी उँगली पकड़ी है।

हम सब बड़े आश्चर्य से देखते रहे। ऐसा उसने कई बार किया। हम हर बार दाँतों तले उँगली दबा लेते। कई दिन बाद मुझे इस खेल का रहस्य पता चला कि यह कोई जादू-वादू नहीं है। यह तो बहुत आसान-सा खेल है। इसे मात्र पाँच संकेत याद रखकर तुम भी दिखा सकते हो।

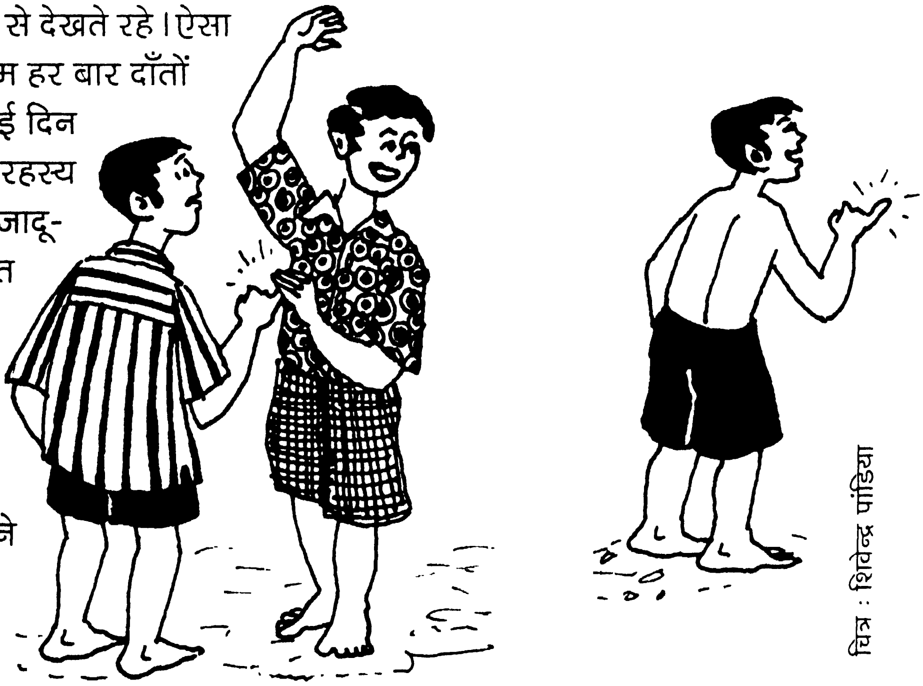

इसके लिए तुम अपने एक दोस्त को अपना जमूरा बना लो। अब तुम अपने जमूरे को पाँच संकेत बताओ। संकेत होंगे, पहला - सुनो, दूसरा - कहो, तीसरा - कह दो, चौथा - बोलो, पाँचवाँ - बताओ। तुम और तुम्हारा जमूरा पहली उँगली यानि तर्जनी को 'सुनो' से पहचानोगे। मतलब यह कि यदि मदारी यानी तुम कहोगे कि, 'सुनो, जमूरे मैंने कौन सी उँगली पकड़ी है' तो तुम्हारा दोस्त बता सकता है कि तुमने तर्जनी पकड़ी है।

इसी प्रकार यदि तुमने खेल दिखाते समय 'मध्यमा' यानि बीच वाली उँगली पकड़ी है तो तुम बोलोगे कि, 'कहो जमूरे, मैंने कौन सी उँगली पकड़ी है?' और जमूरा बना तुम्हारा दोस्त संकेत के द्वारा बता देगा कि तुमने कौन-सी उँगली पकड़ी है।

इस तरह तुम अपने दोस्तों को बड़ी आसानी से आश्चर्य में डाल सकते हो। तो अब देर कैसी? अपने एक दोस्त को यह पाँच संकेत याद कराओ और बन जाओ जादूगर। ऐसा जादूगर जो बगैर देखे ही उँगली बता सकता है। ■■

प्रस्तुति : सुशील शुक्ला

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अन्तर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक MP-2/P-43

❖ शेफाली माने, दसवीं, नीमच, म.प्र.

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल 462 016 से प्रकाशित।

चकमक
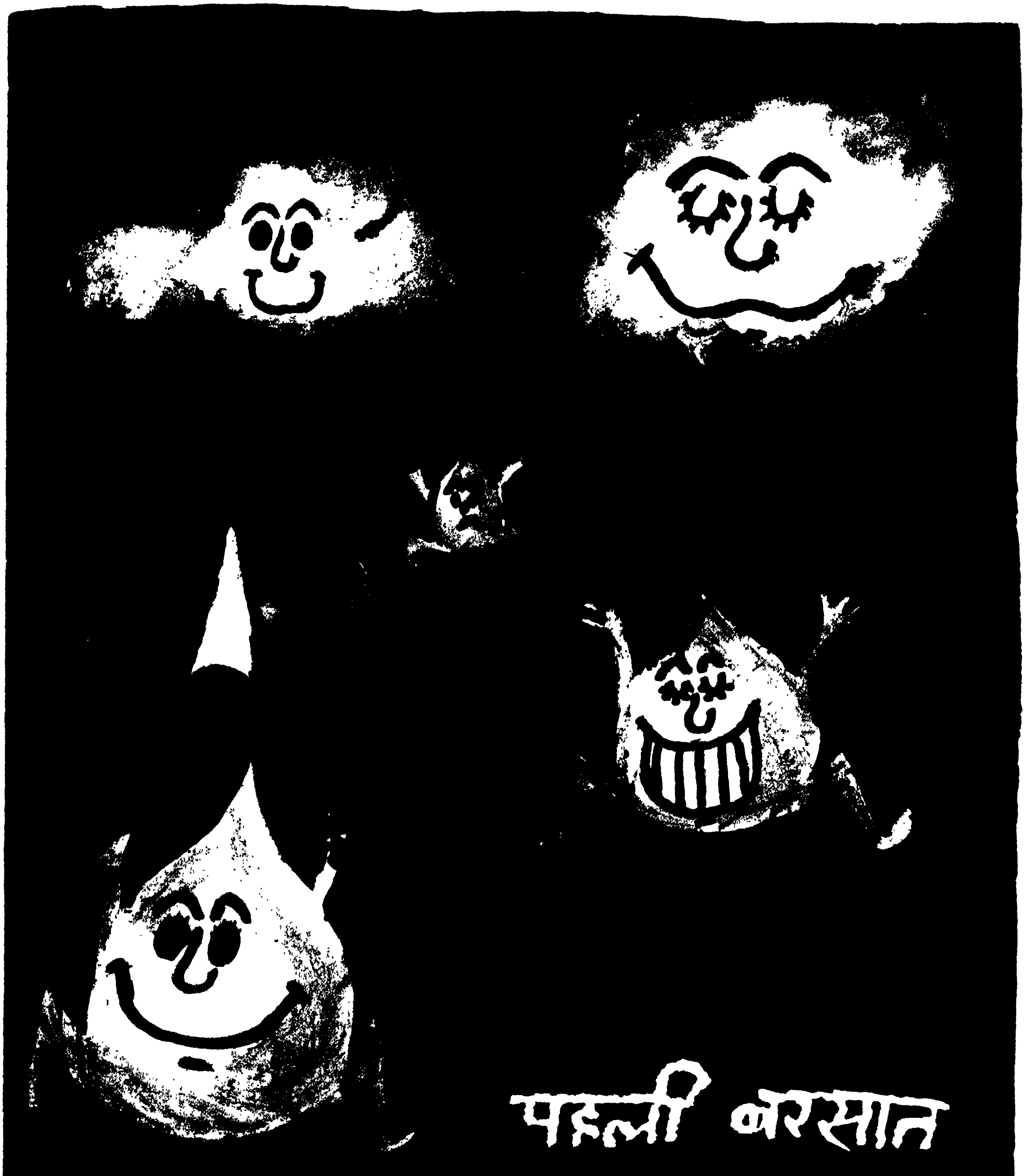
जुलाई, 1999 बाल विज्ञान पत्रिका रु. 10.00